अनगढ़ कविताएँ

हिमांशु यादव

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Himanshu Yadav 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-710-0

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: January 2026

अनुक्रमणिका

दोहे तेरे नाम 1
कुछ मौसमी दोहे.. 2
जीवन दोहे 3
प्रेमज्ञान के दोहे.. 4
कुछ और दोहे.. 5
कुंडलियाँ.. 7
कहमुकरियाँ.. 10
कव्वाली.. 11
ढहे जा रहा हूँ.. 12
सम्मोहन.. 13
मस्त कलंदर 14
अपशगुन 15
मैं देखा हूँ.. 16
समर्पण.. 17
चलेगा 18
फकीरी का मजा 19
रोये हुए हैं 20
क्या सरल है ऐसे मर लेना?.. 21
नारी 23
बढ़े चलो... 24
तू.. 25

आह्वान..26
कर्म..27
आसान नहीं होता 28
मजदूर..29
कौन मजदूर 30
पलायन 31
बदल जाएगी 32
युद्ध शास्त्र 33
बड़े होने चाहिए..34
मौला...35
आखिर क्यों 36
मेरे प्यारे...37
मुसाफ़िर 38
आदमी...39
गिर कर उठना 40
शौर्य...41
जिंदगी 42
अच्छे लगते हैं..43
स्वीकार करो..44
नाथ..45
इंसाँ और परिंदा 46
जिंदगी का हाल...47
आघात 48
आसान नहीं होता 49

बाकी है अभी 50
सही गलत 51
शह और मात 52
मर्जी आपकी 53
पनघट.. 54
बेच कर.. 55
वो कौन.. 56
मैं कौन.. 57
बड़ी बहन 58
बहन.. 59
माँ.. 60
घर और माँ 61
माँ और मैं.. 62
जमीं.. 63
पिता.. 64
पिता.. 65
मैं, दादी और कुत्ता 66
मैं,चींटी और मेरा कमरा.. 68
बदल रहा है.. 70
ऐसी होनी चाहिए.. 71
बदलाव.. 72
एक तरफ.. 73
प्रिये.. 74
मेरे लिए.. 75

रोना पड़ता है 76
सबकुछ तुझसे है 77
प्रेम-आरम्भ 78
इश्क़ 79
बदल गये 80
कंचन पिया 81
नज़र भर प्यार 84
कहो तो 85
पहला मिलन 86
बेटी की विदाई 87
बेटे की विदाई 88
नसीहत 90
मनुज 91
कर्म और भरोसा 92
तेरे काबिल 93
चाहत 94
सुनते जाओ 95
तुमको चलना होगा 96
तुझसे खुशियाँ सारी 98
ओझल पिया 99
है स्वीकार हर कंगाली 101
अर्धांगिनी 102
मेरी होने वाली अर्धांगिनी 104
चाँद सी 107

जमाना साथ देगा?.. 109
तेरे आने से.. 110
प्रेम-स्वीकरण... 111
याद... 112
लिपट जाया कर 113
थामो मुझे.. 114
डर कैसा? 115
वक़्त और मैं 116
बाकी है... 117
आत्म प्रोत्साहन 118
अब रचने की बारी है..119
मेरी तकिया 121
ठंड की गरीबी.. 122
प्रगति.. 123
प्रकृति.. 124
राधा माधव प्रेम 125
उलझन.. 127
तात जब घर आये.. 128
माँ और मंजिल.. 130
मंझधार 132
बीतता वक़्त 133
मैं छला गया हूँ.. 134
क्यों जी रहे.. 135
प्यारे... 136

आत्म-वार्ता.. 137
हुंकार.. 139
भाग्य- कर्म 142
दुनियावी सौदा 143
अंतिम छलांग 144
अंकुरण 145
काश कोई मिल जाये 146
किरदार 147
यज्ञकुंड.. 149
मिलन वृद्धाश्रम का... 151

दोहे तेरे नाम

नारी इस संसार में, कितने तेरे रूप।
ममता की छाया कहीं, और कहीं है धूप।।

जननी, भगिनी, संगिनी, अरु तनया का प्यार।
जिसने हासिल कर लिया, जीत लिया संसार।।

मानवता गर हो बची, कर नारी सम्मान।
माँ, बेटी, अर्धांगिनी, और बहन है शान।।

पत्थर की लकीर बना, सुनो गौर से बात।
अबला के अपमान से, मिलती है बस मात।।

****

कुछ मौसमी दोहे

फिर फिर चाय उबालिये, रंग चढ़न के बाद।
जमकर अदरक कूटिये, तब आता है स्वाद।।

बैठिये न आराम से, त्याग दीजिए चैन।
प्याज पकौड़ी ना मिले, नहिं रोवे यदि नैन।।

ठंडी में बर्तन धुले, पोछा और लगाय।
देव उसका भला करें, ठंड हाय रे हाय।।

ठंडक निशिदिन बढ़ रही, बढ़ती जाए शीत।
बस कंबल में बैठ के, गाते रहिये गीत।।

मान लिया ठंडी वहाँ, दिखा रही औकात।
लेकिन फिर भी है नहीं, दिल्ली वाली बात।।

****

जीवन दोहे

कहिए निजमन की व्यथा, सुनकर हँसिहैं लोग।
मन में दुःख न छुपाइये, निशिदिन बढिहैं रोग।१।

देख पराई पीर को, यदि आवे मुस्कान।
ऐसे इंसाँ से भला, अनपढ़ चक्रीवान।२।

नदियों ने पानी दिया, अरु धरती ने अन्न।
ठूँस सभी कुछ आदमी, फिर भी नहीं प्रसन्न।३।

आगे बढ़ने के लिए, खींच न सबकी टाँग।
लेकर पीछे दो कदम, लम्बी मार छलाँग।४।

कलियुग की संतान से, क्या रक्खें उम्मीद।
दिन भर रहता फ़ोन में, निशा काल में नींद।५।

****

प्रेमज़ान के दोहे

हर प्रेमी पागल भया, खोजे उत्तम प्यार।
सोच हँसी रुकती नहीं, कितने मूरख यार।।

प्रेम- प्रेम में बह रहे, प्रेम न समझे कोय।
जब न रहेगा प्रेम ये, तब पछतावा होय।।

मानुष से कुक्कुर भला, रहे प्रेम से संग।
थोड़ी सी पुचकार से, लड़ जाता हर जंग।।

प्रेम करो पर अति नहीं, ना दो अति का ध्यान।
जाएंगे मुँह मोड़ सब, और बाँट कर ज्ञान।।

प्रेम रास आवे नहीं, जिसे मिले भरपूर।
सदा तरसता छोड़ि के, हो जाते अति दूर।।

****

कुछ और दोहे

लक्ष्य मिलेगा एक दिन, करते रहें प्रयत्न।
खोदे बिन मिलते नहीं, दबे पड़े जो रत्न।।

रोना रोवे हार का, मिले दया की भीख।
छोड़ परिश्रम राह में, रह जाती बस सीख।।

हाँ में हाँ न मिलाइये, घटे आत्मसम्मान।
शक्कर पानी में घुले, खो जाए पहचान।।

उनसे नाता तोड़िये, जिनसे रही न प्रीत।
फटी ढोल को पीट के, बने नहीं संगीत।।

अबके हिय टिकते नहीं, राधा-माधव प्रेम।
क्षणभंगुर संसार में, अब होते लघु-प्रेम।।

प्रेम-प्रेम में बह रहे, युग के तारणहार।
गबरू "बाबू" बन गए, कैसे हो उद्धार।।

चलत फिरत में पग थके, बैठ थके कटिभाग।
सोच सोच के मन थके, जले बदन ज्यों आग।।

ढाई आखर मैं पढ़ा, भयी न उनको प्रीत।
जब पढ़ के पंडित भया, सुना प्रणय के गीत॥

पीपल बरगद सब खड़े, नैना खोजे आम।
कर्म- परिश्रम सब करे, फल से होवे नाम॥

तितली भँवरे फूल पर, मँडराये दिन रात।
जब मानुष खोजे शहद, हो मध्वक की बात॥

****

कुंडलियाँ

नदियाँ पर्वत से चलीं, लेकर निर्मल नीर।
होकर मानुष आलसी, बाँध दिया जंजीर।।

बाँध दिया जंजीर, सकल धाराएँ मोड़ीं।
कूड़े कचरे और, नाले- नालियाँ छोड़ीं।।
जिनका जल था प्राण, बसीं जिनमें थीं सदियाँ।
अब हर लेतीं प्राण, चलीं पर्वत से नदियाँ।।

****

दो पन्नों के बीच में, सूखा प्रेम- गुलाब।
देख उसे मन में उठे, भाँति भाँति के ख्वाब।।

भाँति भाँति के ख्वाब, उठे जब मन में प्यारे।
याद मचाये शोर, बने जब प्रेम- दुलारे।।
हुई पकड़ कमजोर, जब बाहों के भींच में।
मुरझाया था प्रेम, दो पन्नों के बीच में।।

****

रक्षक या भक्षक कहूँ, सोचे कोमल फूल।
मुझको ही चुभता रहे, यह कैसा है शूल।।

यह कैसा है शूल, सताए निशिदिन मुझको।
कभी न करता भूल, बचाए निशिदिन मुझको।।
हो कैसे यह फूल, बिना उसके आकर्षक।
सबकुछ है यह शूल, कहूँ भक्षक या रक्षक।।

****

खिले फूल, महकी धरा, हुआ व्योम खुशहाल।
प्रिय आये, चमके नयन, चढ़ी लालिमा गाल।।

चढ़ी लालिमा गाल, कहे पिया आ खींच लूँ।
आ जाओ हिय पास, आलिंगन में भींच लूँ।।
करूँ तुझे अतिप्रेम, जहाँ कहीं भी हम मिले।
फैल रहा है प्रेम, जबसे यह प्रसून खिले।।

****

कैसे घटी दुर्घटना, बहे नयन-जल धार।
अंगारे बरसन लगे, थमने लगी बयार।।

थमने लगी बयार, सब त्राहि- त्राहि पुकारे।
है तैयार मुखाग्नि, प्राण अब कौन उबारे?
लिखता हूँ पछताय, लखन जी हारे कैसे?
शक्ति बाण का वार, कहो अब टारे कैसे?

****

रचते अपनी धुन सभी, गाते अपने गीत।
राही इस संसार में, सब मतलब के मीत।।

सब मतलब के मीत, बुन रहे ताने- बाने।
स्वार्थ सिद्धि कर रहे, सभी जाने अनजाने।।
पर- पीड़ा को त्याग, सभी कर्मों से बचते।
कण- कण करे पुकार, सभी धुन अपनी रचते।।

****

कलियुग के पापी सभी, नित करते शिव जाप।
कर गंगाजल आचमन, पुनि- पुनि करते पाप।।

पुनि- पुनि करते पाप, समझ या सोच बिना ही।
कर जाते दुष्काम, बिना संकोच गुनाही।।
हुआ जगत हिय- हीन, यही नारा जग- व्यापी।
दूषित गंगा नीर, किये कलियुग के पापी।

****

कहमुकरियाँ

नित अपनों से मिलता जाए
नोंच हृदय को छिलता जाए
आकर खोले बंद झरोखा,
ऐ! सखि साजन, ना सखि धोखा।

मिल जाये तो गले लगाना
उसके खातिर मर मिट जाना
टिका रहे बस रखना ध्यान,
ऐ! सखि साजन, ना सखि ज्ञान।

रहे पराया बहुत सुहाता
अपना फूटी आँख न भाता
जब- जब होता घटता श्लेष,
ऐ! सखि साजन, ना सखि क्लेश।

पाप हुआ तो उसका दोष
जितना मिले घटे सन्तोष
न जाने यह नशा है कैसा,
ऐ! सखि साजन, ना सखि पैसा।

****

कव्वाली

राज हिचकी का, क्या है, मेरे सामने,
कोई याद आता है क्या, हमें देखकर।

आज़मा लो, हमें भी, अगर चाहो तो,
प्यार कर लेंगे हम भी, ये दिल फेंककर।

कच्चे में कोई, स्वाद और, असर है कहाँ,
रिश्ते - रोटी बनाना, जरा सेंककर।

दिल का मिलना, तो वैसे भी, मुमकिन न था,
कहाँ जाते हो मुझसे, नज़र फेरकर।

इतनी जल्दी, तुम्हें गर है, घर जाने की,
रास्ता रोके नहीं हैं, तुम्हें घेरकर।

****

ढहे जा रहा हूँ

जो सहना नहीं था, सहे जा रहा हूँ।
नहीं था जो कहना, कहे जा रहा हूँ।

बना के रखी है, किनारों से दूरी,
लहर संग बस मैं, बहे जा रहा हूँ।

है नादाँ नहीं तू, पता है तुझे भी,
मगर सारे नखरे सहे जा रहा हूँ।

नहीं है पता अब कहाँ मेरी मंज़िल,
कि दिन रात सपने गहे जा रहा हूँ।

मैं सोचा था इक दिन इमारत बनूँगा,
कि जर्जर हुआ हूँ, ढहे जा रहा हूँ।

****

सम्मोहन

होकर सम्मोहित नयनों से मैं न्यौछावर सर्वस्व हुआ,
मृगनयनी का जीवन पर मेरे एकतरफा वर्चस्व हुआ।

कई दफा संकल्प लिए कि अपनी भूल सुधारेंगे,
ना फिर होंगे सम्मोहित और ना ही उसे निहारेंगे।

तोड़- तोड़ संकल्प पुनः मैं उसके समक्ष हारा हूँ,
स्वयं को खोकर नज़रें भर मैं उसका हुस्न सँवारा हूँ।

सुन कर अपनी तारीफें फिर उसका यूँ इठला जाना,
हुस्न के हर पैमाने को बस शरमा कर झुठला जाना।

द्वंद्व युद्ध चलता मन में, क्या स्वीकृति मिलनी तय है?
बस मिलन की है खुशी, या फिर खोने का भय है?

संग उसके देखूँ कठिन स्वप्न, रख भीति किनारे प्रतिदिन,
अधिक कठिन है रख पाना, गृह रीति किनारे प्रतिदिन।

****

मस्त कलंदर

मार्तण्ड सरीख़ी आँखों में,
दो बूँद समंदर लाया हूँ,
खा-खाकर ठोकर जीवन में,
बन मस्त कलंदर आया हूँ।

यायावर तेरी गलियों का,
अब घाट किनारे डेरा है,
छा पर्णकुटी इक खुशियों की,
बस कल ही अंदर आया हूँ।

संतों की संगति करता था,
फिर गान भजन आधार बने,
पर्वत- पर्वत, नदियाँ- झरने,
सब खोज पुरंदर पाया हूँ।

दो बूँद समंदर लाया हूँ...
बन मस्त कलंदर आया हूँ...

****

अपशगुन

चार दिनों से कागा बोले,
चीखे रोज सियार।
फड़के बायीं आँख हमारी
काटे राह बिलार।

रोज दूध का बर्तन छूटे
पूरबी बहे बयार।
आ जाओ प्रिय दर्शन को
अब छूट रहा संसार।

****

मैं देखा हूँ

जलते दीपक की कालिख से मैं काजल बनते देखा हूँ।
जल के कण कण को सागर से मैं बादल बनते देखा हूँ।

मन में उठती हर ज्वाला को शीतलता से बुझने देना,
इक छोटी- सी चिंगारी को दावानल बनते देखा हूँ।

हैं दिख जाते जब भी आँसू बच्चों की आँखों से छलके,
माँ की साड़ी के पल्लू को मैं आँचल बनते देखा हूँ।

दुर्गा, काली, ज्वाला रूपी है घर में जो अबला नारी,
उसके आगे तलवारों को भी पायल बनते देखा हूँ।

कुछ करना हो जीवन में तो संतों के साथी बन जाना,
मूर्खों की संगति वालों को मैं पागल बनते देखा हूँ।

****

समर्पण

कुछ जिम्मेदारी से दबे हर रात सोने जब गया
नींद आंखों से गयी फिर रात पूरी जग गया।

घर छोड़ जब से आया हूँ न सो सका हूँ नींद में
आंखें खुली पथरा गईं एक चाह में, उम्मीद में।

कब आएगा वह वक़्त जब मैं कह सकूँगा शान से
कि माँ सफलता मिल गयी अब झूम लो अभिमान से।

यह सोच दिल घबरा रहा कि उम्मीदों के जाल में
उलझे ही न रह जाएं कुछ रिश्ते इस जंजाल में।

माँ बाबा का ढलता जीवन प्रतिपल एक आघात करे,
दिल खुद को समझाता है पर खुद से कितनी बात करे।

इच्छाओं से आगे बढ़कर पूरे सारे ख़्वाब करूँ,
चरणधूलि धोने को उनके चंबल और चिनाब करूँ।

है भरोसा बाजुओं पर बाँध कब तक रुक सकेगा?
रात- दिन जारी समर्पण लक्ष्य कब तक छुप सकेगा?

****

चलेगा

पड़ेंगे अगर पाँव छाले, चलेगा।
बिछेंगे अगर काँच-काँटे, चलेगा।

उठेंगे कदम तो बढ़ेंगे सदा ही,
चलाये कोई तीर भाले, चलेगा।

लहू से लिखेंगे कहानी नई सी,
अगर छीन लोगे कलम भी, चलेगा।

बना अस्थि खंजर लड़ेंगे समर में,
चलेंगे अगर तोप गोले, चलेगा।

अगर प्रेम है तो हो पूरा समर्पित,
मुझे उससे थोड़ा भी कम ना चलेगा।

****

फकीरी का मजा

फिसल कर फिर फिसल जाना, खड़े होने की चाहत में।
ध्वनित वह नाद भी होगा, टिकोगे जब अनाहत में।

समर में कूद जाने का नतीजा सोच ले साकी।
सिपाही आपके भी हार सकते हैं हताहत में।

रहो छोटे मगर औकात तेरी हो नहीं छोटी।
मजे जो शे'र में मिलते, नहीं मिलते सराहत में।

वही मसनद सजाते हैं जो दिल के खूबसूरत हैं।
यहाँ चाहे रहे कितनी चमक शक्ल-ओ-शबाहत में।

सुकूँ है राह में जितना, वो मंजिल पर नहीं मिलता।
फकीरी का मजा है जो, कहाँ है बादशाहत में।।

****

रोये हुए हैं

कई रात से हम न सोये हुए हैं।
तुझे याद में हम सँजोये हुए हैं।

रहा कुछ न बाकी सिवा तेरी यादें,
बिखरते पलों को पिरोये हुए हैं।

गुलों से जिसे हम सजाते रहे थे,
मेरी राह में शूल बोये हुए हैं।

हमें ना दिखाओ ये हाथों के छाले,
लहू से ज़मीं को भिगोये हुए हैं।

दिलों में बसे हैं, बचे हैं जो राही,
सफर में कई यार खोये हुए हैं।

बहाते नहीं हम दुःखों का समंदर,
किसी के बिछड़ने पे रोये हुए हैं।

****

क्या सरल है ऐसे मर लेना?

अंतर्मन में पड़ी व्यथा को,
कैसे जग जाहिर कर जाऊँ?

मायूसी से झुकी नज़र को,
कैसे यूं स्थिर कर जाऊँ?

मन पछताए, शोर मचाये,
कैसे इसको शांत करूँ?

एकाकी में रूदन करता,
दुर्दिन कैसे दिनांत करूँ?

भारी रहता हृदय आजकल,
जाने कैसा बोझ लिया।

चढ़ूँ अटारी नीचे झांकूँ,
ना जाने क्या सोच लिया।

रही न इतनी हिम्मत कि,
मैं अकर्मण्य जवाँ बैठूँ।

लेकिन कोशिश रहती कि
मैं अपनी जान गँवा बैठूँ।

आसान नहीं है झटके में,
अपने ही प्राण यूं हर लेना।

जाने वालों ने क्या सोचा,
क्या सरल है ऐसे मर लेना?

****

नारी

ये दुनिया ही अलग होती, अगर सीधे लड़े होते,
तुम्हारी हार निश्चित थी, अगर यूँ ही अड़े होते।

पले हैं वीर गोदी में, ये नारी शक्तिरूपा है,
अगर सम्मान भूले तो, वही काली स्वरूपा है।

अनेकों वीर गाथाएँ, पली हैं गर्भ में इसके,
कहानी जीत की मैंने, सुनी संदर्भ में इसके।

कहाँ तक टिक सकोगे तुम, बिगुल जब वार का होगा,
यूँ ही आँखें दिखाना जब, समय संहार का होगा।

नहीं डरती, नहीं झुकती, ये अबला है नहीं नारी,
गढ़ा संसार हो जिसने, सुनो! ये है वही नारी।

****

बढ़े चलो...

बनाओगे कब तक समय का बहाना।
तुम्हारे लिए कब रुका था जमाना?

ये पर्वत, ये नदियाँ, ये अंधेरे जंगल,
पड़ा है यहीं पर वो अनगिन खजाना।

हासिल करो सब तुम्हारे लिए है,
किसी और को राज क्यों है बताना।

उठोगे, लड़ोगे, तो मंजिल मिलेगी,
यूँ ही बैठ कर वक़्त क्यों है गँवाना।

लगाओ छलाँगे, समंदर सुखा दो,
हवा मोड़ कर है दिवाकर बुझाना।

सभी ताक में हैं, तेरी हार खातिर,
तुझे जीत कर, है सभी को हराना।

कदम यूँ बढ़ाओ कि गज काँप जाए,
शक्ति- मुकुट अपने मस्तक सजाना।

तू

बहुत बाजियां हार चुका, संभाल ले अपनी तू तलवार,
पलटने को दिशा- दशा, दुश्मन को अब तू ललकार।

युद्ध नहीं जीते जाते कुछ रक्त बिना न्यौछावर के,
ले जिम्मेदारी हार की, फिर जीत का है तू हकदार।

जब शूल चुभे तो खुद निकाल, दूसरे और चुभाएँगे,
जीवन की नैया खेने को, बस एकमात्र है तू पतवार।

जीवन में संकट आएँगे, फिर रौद्र रूप दिखलाएँगे,
करने को संहार असुर का, बन जाना खुद तू हथियार।

****

आह्वान

कंपित करूँ धरा मैं, पैरों की थाप से,
सूख जाए रत्नाकर, मेरे प्रताप से।

हो इतनी अग्नि प्रबल, मेरे सीने में,
जल उठे कानन समूल मेरे ताप से।

कुठार- से कठोर हों भुजदण्ड मेरे,
कर सकूँ मही को मुक्त, सारे पाप से।

शत बार खड्ग उठाये ऋषि मुनि ने,
चलता नहीं समाज बस मंत्र जाप से।

दिग्विजयी होंगे आप सच्चे मायनों में,
गर जीत गये आप ही, खुद आप से।

न छेड़, न सता, दुर्बल से प्रेम कर,
लगती है हाय, गरीब के विलाप से।

****

कर्म

पिछले जन्म को दोष दे कुछ लोग पछताते नहीं,
अगले जन्म में कार्य- सिद्धि सोच शर्माते नहीं।

आज हो तुम इस धरा पर, आज जीना सीख लो,
शोहरतें हैं कर्म से, वरना किसी से भीख लो।

कर्म का अमृत शहद, निष्काम का तीखा गरल,
आज में जीना कठिन या आज मर जाना सरल?

नित राह होती है कठिन एक कर्मठी के सामने,
पर कौन टिक पाया है आज तक हठी के सामने।

है मनुष्य जन्म तो कुछ कर के जाना पड़ता है,
ख़्वाहिशें हैं स्वर्ग की तो मर के जाना पड़ता है।

****

आसान नहीं होता

श्रम से मिले मुकाम पर गुमान नहीं होता,
रोकना उबलते रक्त को आसान नहीं होता।

चाहे किसी के पास अरबों लाख रुपये हों,
जो दिल का धनी नहीं वो धनवान नहीं होता।

बाहुबल बढ़ा लो चाहे, सौ दण्ड पेल के रोज,
जिसे क्षमादान ना आये वो बलवान नहीं होता।

कुछ कर्म करने पड़ते हैं, इंसानियत भरे,
जन्म लिया हर आदमी इंसान नहीं होता।

तूफानों में कश्ती तो वीर चलाया करते हैं,
कायरों की सीमा में, आसमान नहीं होता।

देवता- तुल्य होते हैं अतिथि, भारत देश में,
हर शख़्स जो घर आये, वो मेहमान नहीं होता।

****

मजदूर

छप्पन भोग भोजन नहीं, एक रोटी की दरकार थी,
दरकिनार कर डाला हमको, ऐसी एक सरकार थी।

याद है कि छीने थे, एक - एक निवाला कंठ से,
पीने लगे थे रक्त फिर, न मिला दूध जब ठंठ से।

सहायता के नाम पर, भाषण पिलाये जाते थे,
वादा था रोटी का, पर जुमले खिलाये जाते थे।

थकान, आँसू, भूख, प्यास और पैरों में छाले थे,
पाई- पाई छीन लिया जो मुश्किल से सम्हाले थे।

आजकल की बात क्या सदियों से आत्मनिर्भर थे,
फैलाया नहीं हाथ कभी, दिन कितने भी दूभर थे।

तेरे नींव के पत्थर खड़े हैं, बूँद - बूँद पसीने से।
जो कहीं ज्यादा उज्ज्वल थे, तेरे कीमती नगीने से।

****

कौन मजदूर

सदियों से कुछ दर्द छुपाये बैठे हैं,
सम्मान में नज़रें झुकाये बैठे हैं।

बात करते हो क्या प्रेम की तुम,
तिरस्कार भी सीने लगाये बैठे हैं।

न लेना इम्तिहान मेरे सब्र का,
तूफ़ान में दीये जलाये बैठे हैं।

बह जाने को, रक्त ही बचा है अब,
एक अरसे से आँसू सुखाये बैठे हैं।

गरीब की कुटिया से और लेना क्या
अपना हम सर्वस्व लुटाये बैठे हैं।

नहीं चाहिए तुमसे, खैरात अब कोई
इन हाथों से कई स्वर्ग बनाये बैठे हैं।

****

पलायन

था मिला बमुश्किल ठिकाना शहर में,
खामखा फँसी रात, नैया भँवर में।

दिक्कतें बढ़ीं फिर, हुआ कीट हमला,
योग्यता नहीं थी, दवा के ज़हर में।

कारवाँ बँधा, हाथ जुड़ते गये फिर,
कदम से कदम को, मिलाते डहर में।

पिघलती गयी बर्फ, राहें कठिन थीं
कदम ताप सहते, कड़ी दोपहर में।

रात को सुनाते, कथा बालकों को,
वीर है वही जो टिका था कहर में।

दुपहरी **कहीं** खोज लेना ठिकाना,
चमकती नहीं धूप, शामों सहर में।

****

बदल जाएगी

ये सूरत भी एक दिन बदल जाएगी,
गर आयी है मुश्किल तो टल जाएगी।

इस अदा से अता ना करो मेहरबाँ,
लेने वालों की नीयत फिसल जाएगी।

आग से तुम हमेशा न खेला करो,
ये दुनिया किसी रोज जल जाएगी।

आफ़ताब से यूँ नज़रें मिलाना नहीं
ये शगुफ़्ता तुम्हारी भी ढल जाएगी।

कल की छोड़ कल पे जियो आज को,
ज़िन्दगी रफ़्ता- रफ़्ता निकल जाएगी।

****

युद्ध शास्त्र

दावानल सी धधक उठे, जब ज्वाला वक्षस्थल में,
मंजिल को फिर नहीं ढूंढते, नैनों के खारे जल में

लक्ष्य अगर हो सामने तो प्रत्यंचा पर शर हो,
सारंग खोजते ये नहीं कि, भूलने का डर हो।

खड्ग म्यान से बाहर हो, मैदान हो जब जंग का,
मजबूत पकड़ हो ढाल पर, और कवच हो ढंग का।

नज़र लक्ष्य पर टिकी रहे और भुजदंडों में बल हो,
कर डालो जो आज है संभव, क्या पता क्या कल हो।

हो सकता कमजोर नहीं वो, गर तुम्हारा दुश्मन है,
शीश काट धड़ मुक्त करो, गर मनुज वो दुर्जन है।

****

बड़े होने चाहिए

रीति- धर्म घर के कड़े होने चाहिए,
घर नहीं, घराने बड़े होने चाहिए।

झूठ भी मुकदमें जिता देते हैं कभी,
स्वर नहीं, बहाने बड़े होने चाहिए।

महफिलें सजाओ बजेंगी ही तालियां,
सुर नहीं, तराने बड़े होने चाहिए।

मंजिलें मिलेंगी अगर हिम्मती हुए,
डर नहीं, ठिकाने बड़े होने चाहिए।

मोह मोह के खेल में गर टूटा जिगर,
गम नहीं, फ़साने बड़े होने चाहिए।

गर गरीब का पेट भरने की चाह है,
दर नहीं, ख़ज़ाने बड़े होने चाहिए।

****

मौला

किले जो ख़्वाहिशों के थे वो पल में ढह गये मौला,
फँसे मझधार में जो लोग जल में रह गये मौला।

तराशा था सफर अपना करीने से सजाया था,
चली जो आँधियाँ सब ताज पल में बह गये मौला।

सताना था तो पूरी रात हमको वो जगाये थे,
लबों से जो छुपाये थे वो नैना कह गये मौला।

हुआ था दर्द मुझको भी, हुआ था दर्द उनको भी,
जमाने के लिए हम दर्द सारे सह गये मौला।

बना था इक घरौंदा प्रेम का अतिप्रेम को पाकर,
बचाना चाह कर भी हम गिराते रह गये मौला।

****

आखिर क्यों

गर नींद है इतनी ज़रूरी, जिंदगी है क्यों यहाँ?
गर छोड़ना है सब यहीं फिर तिश्नगी है क्यों यहाँ?

सब आँख उनको हैं दिखाते, सामने जो भी खड़ा,
खुद की नज़र में सब सही फिर रिन्दगी है क्यों यहाँ?

खुद ही बने सब फिर रहे हैं रात- दिन भगवान अब,
आयी बला तो सामना कर, बन्दगी है क्यों यहाँ?

दिखता रहा झूठा इरादा, झूठ तुम कहते गये,
गर साफ है दामन तुम्हारा, गंदगी है क्यों यहाँ?

कुछ छीनते हैं, बीनते हैं कुछ यहाँ पर ज़िंदगी,
इंसानियत जब है नहीं फिर उम्दगी है क्यों यहाँ?

हर मंजिलें उनको मुबारक जिनको खुद पे है यकीं,
मंजूर है गर भीख फिर, शर्मिंदगी है क्यों यहाँ?

****

मेरे प्यारे

कभी रुकती नहीं दुनिया पिछड़ना मत मेरे प्यारे।
कभी आगे निकलना हो तो मुड़ना मत मेरे प्यारे।

पकड़ के टाँग तेरी खींचने को हाथ आये गर,
कदम आगे बढ़ा लेना तू लड़ना मत मेरे प्यारे।

चिरागों से भरा होगा सफर, तो रोशनी लेना,
किसी तकदीर की उलझन में पड़ना मत मेरे प्यारे।

खुले इस आसमाँ में पंख फैलाओ कभी खुल कर,
समेटेगी ये दुनिया पर सिकुड़ना मत मेरे प्यारे।

मिलेंगी मंजिलें तुमको, बना कर हौसला रखना,
हुई हासिल किसी दिन तो अकड़ना मत मेरे प्यारे।

****

मुसाफ़िर

मुसाफ़िर मुब्तदी जो था सफर में, आज माहिर है।
जमाना जिसको भूला था, जहाँ में आज ज़ाहिर है।।

जिसे आवाम ने दुत्कार कर पागल बताया था,
जुनूँ था कर गुजरने का, किया तो आज साहिर है।।

सताया है ज़माने ने सभी को जिसने कोशिश की,
किया कोशिश भुलाने की ख़ता वो आज काहिर है।।

सभी ज़ुल्मों पे चुप रहना किया जब बंद तो देखा,
दबे आवाम की बरसों दबी आवाज़ बाहिर है।।

इबादत कर खुदा की भी बशर्ते काम पूरा हो,
उठा नजरें किया जिसने मशक्क़त, आज ताहिर है।।

****

आदमी

यह सवाल रोज- रोज खाये जा रहा,
आदमी क्यों खुद में ही समाये जा रहा?

मिल रहा न कोई आस-पास हो के भी,
आदमी क्यों आँख भी चुराये जा रहा?

एक दूसरे से हार जीत के लिये,
आदमी को आदमी सताये जा रहा।

बढ़ रही दिलों में नफ़रतें हरेक दिन
आदमी क्यों प्रेम को छुपाये जा रहा?

आदमी है वो जो मुश्किलों में साथ दे,
आदमी परम्परा भुलाये जा रहा।

****

गिर कर उठना

कभी चोट खाकर जमीं पर गिरोगे,
कभी मुस्कुराते हुए भी फिरोगे।

नहीं है ये काफी जरा साँस लेना,
बिना कर्म के काठ जैसे चिरोगे।

न कम हो रही हों तेरी चाहतें गर,
भँवर में किसी दिन अकेले घिरोगे।

नशे से बुरी हैं बुरी आदतें भी,
न संभाल पाए तो बेज़र फिरोगे।

अगर बाजुओं में नहीं है इरादा,
उठोगे नहीं गर फिसल कर गिरोगे।

****

शौर्य

पार्थ उठो गांडीव सम्भालो, युद्धभूमि में रक्त बहा लो।
शत्रु बहुत प्रबल है माना, कुछ अपना भी शौर्य दिखा लो।।

अति भीषण है यह संग्राम, करके गुरुजन को तू प्रणाम।
शत्रु- रुधिर का हो तिलक, यदि वापस आना गृहधाम।।

म्यान से बाहर आना होगा, तीक्ष्ण धार दिखलाना होगा।
खोकर रजत- कांति अपनी, अब लहू- स्नान कराना होगा।।

अभेद्य कवच और सिरस्त्राण,भय से कंपित हो अरि के प्राण।
घनघोर पराक्रम हो रण में, जबतक न प्राप्त हो परिनिर्वाण।।

आज है आह्वान, रण का, देर न हो जाये क्षण का।
दृष्टि रखना प्रखर इतनी, छू न जाये शर शत्रुगण का।।

अभिमान न हो जीत से, और हारना नहीं भीत से।
लक्ष्य विजय का हो मगर, करना पराक्रम नीति से।।

****

जिंदगी

जान पाते अगर तो न होता वहम,
यार होते सभी के हैं दो-चार गम।

गर बुरे हो तो हिस्से में है बस खुशी,
नेक बंदे पे तकदीर करती सितम।

ये कहानी गमों की सुनाना कठिन,
सूख जाए गला और फिर आँख नम।

भाव बहने लगेंगे बिना बाँध के,
क्या पता गर कोई दर्द हो जाये कम।

कह सके कोई तुमसे तो सुनना जरा,
बात दिल की सुनाने में लगता है दम।

****

अच्छे लगते हैं

गुल, दरख़्त, चाँद, नाव, और दरिया अच्छे लगते हैं,
उनसे मिलने जुलने के सब ज़रिया अच्छे लगते हैं।

शावक चूजे या पिल्ले हों या मानव के राजा बाबू,
जब तक छोटे रहते बेटे- बिटिया अच्छे लगते हैं।

हैं इमारतें नभचुम्बी, पर अपनों सा अपनत्व कहाँ?
मिट्टी वाले घर के थपुवा- नरिया अच्छे लगते हैं।

काँव- काँव क्या होता, और ये कोयल कैसे गाती है?
अब तो सबको नकली चीता- चिड़िया अच्छे लगते हैं।

कितने अरसे बीत गए माँ की गोदी में सिर रखे,
रंगबिरंगे मखमल के ना तकिया अच्छे लगते हैं।

****

स्वीकार करो

तन्हाइयों में बैठ कर ना खुद को इतना प्यार दो।
आकर हमारी ज़िंदगी में ज़िंदगी सँवार दो।

यदि जा रहे बाजार में तन्हाइयों को बेचने,
गिरवी रखो ये जिंदगी सबकुछ हमें उधार दो।

गर चाहिए कोई वजह आने को पास में मेरे,
सारी खुशी लेकर हमारी और गम नकार दो।

तन्हाईयाँ मेरी सभी, सारी खुशी तेरी हुई,
फिर भी कोई उलझन बचे, तो बस हमें पुकार दो।

लेकर गमों की गठरियाँ, हम चल पड़ेंगे साथ में,
तुम प्रेम से मेरे सफर में कुछ कदम गुजार दो।

मर्जी अगर है आपके जीवन में बस खुशी रहे,
चुन फूल औ कलियाँ मुझे काँटों सहित बुहार दो।

****

नाथ

पर्वतों की चोटियों को देख हैं अभिरामिनी।
आपगा की धार जैसे चल रही गजगामिनी।

रात तारों का नया घूँघट निकाले छुप रही,
नव विवाहित हो गयी हो आज जैसे यामिनी।

भानु किरणों ने हटायी लाज का पर्दा सुबह,
रात सकुचाई बहुत ज्यों देख पति को कामिनी।

बादलों ने घेर कर कैलाश को गीला किया,
नाथ जब फिर भी न पिघले, गिर पड़ी सौदामिनी।

देख कर आतंक क्रोधित नाथ के नैना खुले,
हो गए फिर शांत, देखा सामने भवभामिनी।

****

इंसाँ और परिंदा

ऐ कुदरत तेरे घर के हम बाशिंदा हो गये।
खुदा की रहमत थी कि इंसाँ नहीं परिंदा हो गये।

उड़ता देखता हूँ कपटी और लालची मनुष्य,
उनके कर्मों से ये खग भी शर्मिंदा हो गये।

है अपार बुद्धि, पर कुटिलता भी कम नहीं,
उस कुटिल बुद्धि से जाति ये चुनिंदा हो गये।

कसर छोड़ी **नहीं** खुदा ने इक इंसाँ बनाने में,
पर किस श्राप से ये आज इक दरिंदा हो गये?

****

ज़िंदगी का हाल

जिंदगी ने हँसाया रुलाया बहुत।
राह में घाव अपनों से खाया बहुत।

घाव भरते रहे सीखते हम चले,
बीच में पैर सबने अड़ाया बहुत।

भावनाएँ हमारी न आहत हुईं,
ठोकरों ने हमेशा सिखाया बहुत।

कोशिशों से कभी भी न पीछे हटे,
मुश्किलों ने सदा ही सताया बहुत।

मात मिलती रही, यत्न करते रहे,
अंत में जिंदगी ने जिताया बहुत।

****

आघात

हालत नहीं कि लिख सकूँ हालात पर।
मैं सोचता हूँ चुप रहूँ आघात पर।

ये जिंदगी मुश्किल नहीं गर बात हो,
बस आपको इज़्ज़त मिले हर बात पर।

कहते हैं वे जीना नहीं तेरे बिना,
कैसे भरोसा कर सकूँगा 'हात' पर।

जिनको नहीं है जीमने का इल्म भी,
वे खोजते हैं ऐब मालूमात पर।

गर मान बैठे हो हमारी गलतियाँ,
कहना नहीं है कुछ भी इल्ज़ामात पर।

जिंदा अभी हूँ सामने तेरे लिए,
फिर क्या कहूँ मैं आलम-ए-जिन्नात पर।।

****

आसान नहीं होता

श्रम से मिले मुकाम पर गुमान नहीं होता,
रोकना उबलते रक्त को आसान नहीं होता।

चाहे किसी के पास अरबों लाख रुपये हों,
जो दिल का धनी नहीं वो धनवान नहीं होता।

बाहुबल बढ़ा लो चाहे, सौ दण्ड पेल के रोज,
जिसे क्षमादान ना आये वो बलवान नहीं होता।

कुछ कर्म करने पड़ते हैं, इंसानियत भरे,
जन्म लिया हर आदमी इंसान नहीं होता।

तूफानों में कश्ती तो वीर चलाया करते हैं,
कायरों की सीमा में, आसमान नहीं होता।

देवता- तुल्य होते हैं अतिथि, भारत देश में,
हर शख़्स जो घर आये, वो मेहमान नहीं होता।

****

बाकी है अभी

चल दौड़ ले साथी जवानी है अभी।
इस दौर में बाकी कहानी है अभी।

जिनको लगा किस्सा हमारा खत्म है,
उनको मधुर कविता सुनानी है अभी।

माना मिटीं विधि की लकीरें हाथ से,
निजकर्म का माथे निशानी है अभी।

जनता कहेगी क्या अगर ऐसा करूँ?
मत सोच! ये इज़्ज़त कमानी है अभी।

जमती गयी है धूल परतों में यहाँ,
रगड़ो जरा खुद को रवानी है अभी।

यूँ ही नहीं हरि को मिली थीं गोपियाँ,
सब त्याग के मुरली बजानी है अभी।

****

सही गलत

ये समंदर उबलते नहीं हैं कभी।
बाज यूँ ही मचलते नहीं हैं कभी।

शाम सूरज निकलते दिखा है कभी?
जो हुए खाक जलते नहीं हैं कभी।

उनके आने की उम्मीद है भी मगर,
जो गए यार मिलते नहीं हैं कभी।

लक्ष्य तय ही नहीं और गिर भी गए,
लोग ऐसे संभलते नहीं हैं कभी।

माँ पिता ही सिखाते सही या गलत,
पेड़ पर ज्ञान फलते नहीं हैं कभी।

****

शह और मात

आँखें ही जब सूखी हों तो अश्रु कहाँ बह पाएगा,
जब मापोगे पैमाने पर, तो प्रेम कहाँ रह पाएगा।

जन्म लिये जो फूलों पर जिनके बिस्तर थे मखमल के
जिसने न सहा हो कांटों को वह जुल्म कहाँ सह पाएगा।

कर्म सभी के काले हैं लिपटे सफेद परिधानों में
जिसने देखी हो मात कई एक शाम वही शह पाएगा।

जो रूठ गए और चले गए जिनका जाना अनिवार्य रहा
उनसे पूछो क्यों जाते हो वह कारण क्या कह पाएगा।

मिट्टी ही गुणवान रहे तो मटके- दीये बन पाते,
अगर भुरभुरी हुई मृदा कुम्हार कहाँ गह पाएगा।

हर लक्ष्य को हासिल वही किये जिनमें विनम्रता भरी रही
जिससे न ढहा निज दंभ कभी तो संकट क्या ढह पाएगा।

****

मर्जी आपकी

तनहाइयों में बैठ कर ना खुद को इतना प्यार दो।
आकर हमारी ज़िंदगी में ज़िंदगी सँवार दो।

जाना पड़े बाजार में तनहाइयों को बेचने,
गिरवी रखो ये जिंदगी सब कुछ हमें उधार दो।

गर चाहिए कोई वजह आने को पास में मेरे,
सारी खुशी लेकर हमारी और गम नकार दो।

तनहाइयाँ मेरी सभी, सारी खुशी तेरी हुई,
फिर भी कोई उलझन बची, तो बस हमें पुकार दो।

लेकर गमों की गठरियाँ, हम चल पड़ेंगे साथ में,
तुम प्रेम से मेरे सफर में कुछ कदम गुजार दो।

मर्जी अगर है आपके जीवन में बस खुशी रहे
चुन फूल और कलियाँ मुझे काँटों सहित बुहार दो ।

****

पनघट

शाम सुहानी, दमक उठी थी चाँदनी।
आयी पनघट, गागर भरने यौवनी।।

शोर सुनी तो, हिय काँपा भौंहें तनी।
पाँव हटाते, पीछे कौंधी दामिनी।।

पायल टूटी, फूटी गगरी, हिय डरा।
बादल गरजे, बढ़ा सघन घन दायरा।।

क्या हुआ यहाँ, समझ न आया माज़रा।
धड़के जियरा, छूट गया सब आसरा।।

सुनो फलाने, पैजनी तो टूट गयी।
कल जो लाये, गागर भी तो फूट गयी।।

अब मैं कैसे, पनघट से पानी भरूँ।
बिन घूँघर तो, आने से भी मैं डरूँ।।

****

बेच कर

कहीं रोटियाँ मिलती हैं बदन बेच कर।
कहीं कुर्सियाँ मिलती हैं वतन बेच कर।

कभी पक्षियाँ उड़ती थीं उन्मुक्त गगन में,
अब छुप रहीं गुफा में गगन बेच कर।

उनकी बातों से हम तुम गुमराह पड़े हैं,
और वो सोते हैं चैन-ओ-अमन बेच कर।

ससुराल भेजा था कर्ज़ ले के पिता ने,
वो चल दिये हैं मायके सजन बेच कर।

सजते हैं दरबार अब भी उसी शान से,
पर वो दिखते फ़क़ीर हैं भवन बेच कर।

उस ज़नाज़े में शामिल सभी थे मगर,
आई चंदन की लकड़ी कफ़न बेच कर।

****

वो कौन

अगर झूठी लगे ख़बर तो अख़बार होगा वो।
है भाषा में चापलूसी तो सरकार होगा वो।

बुद्धिमान कभी संचित करते नहीं धन को,
धन- लोलुपता है अगर तो गँवार होगा वो।

मालिक है इंसान बस अपनी ही मर्जी का,
अगर मर्जी नहीं है तो बलात्कार होगा वो।

कहते हैं कि सब दिन होते एक समान हैं,
जो दर्द में हो मुलाज़िम तो सोमवार होगा वो।

वो मनुष्य है जो ज़िन्दगी का भार ढोता है,
अगर सीख लिया जीना तो कलाकार होगा वो।

****

मैं कौन

घिरे काँटों में महकता एक गुलाब हूँ मैं।
तेरे तमाम सवालों का एक जवाब हूँ मैं।

प्रतिदिन तेरे दुःखों का अंबार देखता हूँ,
भुला दे सारे गम ऐसी एक शराब हूँ मैं।

हूँ दिखता फकीर ज़माने की नज़र से,
अगर हृदय में झाँको तो नवाब हूँ मैं।

बदलाव की जरूरत है बदले की नहीं,
है बुलंद इरादे और इंकलाब हूँ मैं।

गर जानना है मुझको तो पढ़ना सीख लो,
देखो लगा के ऐनक, खुली किताब हूँ मैं

****

बड़ी बहन

खुश होती थी सोचकर कि भाई आयेगा,
नहीं पता था वही मेरी जुदाई लायेगा।

गोद छीना माँ का और छीन लिया दुलार,
पापा का कँधा छीन चुरा लिया सब प्यार।

थप्पड़ भी बन जाती है अब माँ की थपकी,
कोई नहीं सुलाता जब आती है झपकी।

कहते हैं सब, ना कर हल्ला, सो रहा है,
किसे बताऊँ दिल मेरा अब रो रहा है।

खोकर सारा प्यार अकेली रहती हूँ,
उस छुटकू के नखरे सारे सहती हूँ।

****

बहन

अर्णव- सा हो विशाल हृदय

और कर्ण- सी दानवीरता हो,

दिनकर- सा हो उज्ज्वल मुख

और ज्योत्सना- सी शीतलता हो,

धरणी- सा हो प्यार भरा

और पुष्पों- सी कोमलता हो।

इन सारे गुण का संगम

जिसमें एक साथ हो,

बहन वही तो है।

****

माँ

माँ तू अम्बर, माँ तू धरणी,
है तू अग्नि की ज्वाला माँ।
दरिया तू है, तू ही समंदर,
तू है अमृत का प्याला माँ।

सूरज है तू, चाँद भी तू है,
तू तरुवर की छाया माँ।
तेरी ममता के आलोक से,
वह ईश्वर भी शरमाया माँ।

****

घर और माँ

खुशियों से भरा एक घर हो
बस वहीं शाम-ओ-सहर हो।

कोई और न हो बस तू ही रहे
तेरे आँचल में जीवन बसर हो।

गम के बादल न घिरने पायें
वहाँ न तेरी खुशी में, कोई कसर हो।

करे खुदा तेरी, हिफाज़त सदा
मेरी दुआओं में ऐसा असर हो।

आशीर्वाद सदा तेरा बना रहे,
दुःख को इसकी कभी न खबर हो।

चाहे शूल बिछे, पर कदम न रुकें
कुछ ऐसा ये जीवन डगर हो।

****

माँ और मैं

"और कब तक बेटा?"

"अब ज्यादा देर नहीं माँ।"

कितना मुश्किल होता है न

एक अनिश्चित उत्तर को,

निश्चय का चोला पहनाना?

और

अंतर्मन में

उस अनिश्चितता की परछाईं से

पीछा छुड़ाने की कोशिश में

हर दिन नाकाम हो जाना।

****

जमीं

गगन चूमने का हौसला रखता हूँ,
क्योंकि मेरा पाँव जमीं पर है।

बादलों का सुख आसमान में नहीं,
क्योंकि उनकी छाँव जमीं पर है।

बेशक मेरी उड़ान दिन- प्रतिदिन
और भी ऊँची होती जा रही है,

पर लौट आता हूँ वापस फिर- फिर,
क्योंकि मेरा गाँव जमीं पर है।

****

पिता

छुप- छुप कर रोना, रो कर सोना,
दुःख- दर्द में भी, मुस्कान पिरोना।

हिमानी सुखों की, है दुःखों का सागर,
पथरीले समाज में है मखमली चादर।

सर्वस्व समर्पित, प्राण भी अर्पित,
श्रमजल से उसके, सब हैं तर्पित।

रवि सम प्रताप, शशि सम शीतलता,
कंटक सा रक्षक, कुसुम सी कोमलता।

चूरन की गोली, या मिट्टी की गुड़िया,
बटुआ है उसका, या जादू की पुड़िया।

बेटियों की शान, बेटे का अभिमान,
वो एक पिता ही है, जो है महान।

****

पिता

पकड़ के तेरी उँगली मुझे जीना आ गया।
दुःख दर्द भरे आँसुओं को पीना आ गया।

छप्पर पे नयी घास चल फिर से बाँध लें,
देख फिर ये भादो का महीना आ गया।

ऐसी मेहनत है मेरी कि दर्द बह जाएगा,
वो डूब सकें इतना पसीना आ गया।

कुछ कर्म करूँ ऐसा कि नाम हो तेरा,
तू बोल उठे गर्व से नगीना आ गया।

तिलक लगाये घूमूँ मैं सारे धाम की,
जो तू मिले तो लगता है मदीना आ गया।

****

मैं, दादी और कुत्ता

दादी की हर बात मानने का जुनून था,
फुर्तीला बहुत ही वो बचपन का खून था।

बची-खुची रेत पड़ी थी, कुछ हमारे घर में,
एक झुंड था कुत्तों का उसी की शरण में।

देख उड़ती रेत मुझको दादी ने हुँकार दिया,
ले दादी का डंडा मैंने कुत्तों को ललकार दिया।

भागते देख कुत्तों को मैं वीर बन गया,
वो छोटा डंडा दादी का शहतीर बन गया।

फेंक के डंडा मैंने फिर कुत्तों पर प्रहार किया,
देख निहत्था मुझको अब कुत्तों ने पलटवार किया।

वो काटने से पहले बहुत जोर गुर्राया था,
बंद थीं मेरी आँखें, पर लोगों ने बचाया था।

घुटने से ले के तलवे तक बहुत खून बहा था,
पूछने पर माँ से बोला दादी ने ही कहा था।

ममता-वश माँ ने उनको भला-बुरा सब कह दिया,
बिना गलती के दादी ने चुपचाप सब सह लिया।

माँ के डर से सारी गलती दादी पर मैं थोप दिया,
झूठ बोल पापों का छुरा अपने दिल में घोंप लिया।

****

मैं,चींटी और मेरा कमरा

एक दिन लगा था चींटियों का रेला,
दिन भर मैं घूरता रहा बैठा अकेला।

झाड़ू उठाया फिर थक- हार के,
उनका कूड़ा बनाया उन्हें झाड़ के।

अगली सुबह फिर वही हाल था,
कैसे भगाऊँ एक बड़ा सवाल था।

उन चींटियों से अब एक जंग होनी थी,
उनकी लंबी कतार फिर भंग होनी थी।

कमरे को धोया पानी की धार से,
फिर चींटी से बोला बड़े ही प्यार से।

अकेला हूँ मुझको यूँ तंग ना करो,
इस गर्मी में चैन मेरा भंग ना करो।

वो बोली- भले ही मैं पिद्दी बहुत हूँ,
न जाऊँ यहाँ से मैं ज़िद्दी बहुत हूँ।

अंततः मैं हार गया और वो जीत गईं
अब बैर भरी पुरानी बातें भी बीत गईं।

दोस्ती हुई अब, तो पूरा कमरा घूम लेती हैं,
ध्यान न दूँ तो अक्सर मुझे चूम लेती हैं।

****

बदल रहा है

अब खोल अपनी आंखें, ये 'घर' बदल रहा है,
तू सुन ज़रा शहनाइयों का 'स्वर' बदल रहा है।

टुकड़ा था जिगर का मैं, वो वक़्त और था,
रख पैर जमीं पर तू अब 'जिगर' बदल रहा है।

पूजता था जिसको मैं भगवान की तरह,
अब मत चढ़ा प्रसाद तू, 'पत्थर' बदल रहा है।

जिस प्रेम में मैं लुट गया सब छोड़- छाड़ के,
अब प्यार का वो ढाई 'अक्षर' बदल रहा है।

अनंत तक मैं उड़ सकूँ, ये सपना था मेरा,
बदल दे सारे सपने, वो 'पर' बदल रहा है।

पगड़ी तू प्रतीक है इज़्ज़त औ शान की,
उतर के दूर हो ज़रा अब 'सर' बदल रहा है।

जब कोई दवा काम ना आये तो दुआ कर,
पर अब ज़रा संभल के, 'ईश्वर' बदल रहा है।

बदलेगा ये क्षण, ज़रा विपरीत है अभी,
थोड़ा इंतज़ार कर, 'अवसर' बदल रहा है

****

ऐसी होनी चाहिए

केश मेघ से रहें और चोटी होनी चाहिए।
थोड़ी सी चंचल और घर की छोटी होनी चाहिए।

हड्डियाँ ही हड्डियाँ हों ये हमें मंजूर नहीं,
चाँद जैसी हो और थोड़ी मोटी होनी चाहिए।

जब भी खुले मुख तो स्वर मधुर बना रहे,
ये नहीं कि बात सारी खोटी होनी चाहिए।

हर कला में हो निपुण ये जरूरी है नहीं,
गोल हो या हो तिकोनी, रोटी होनी चाहिए।

****

बदलाव

धरा के जलाशय उबलने लगे,
है कोशिश कि बादल पिघलने लगे।

मिले धूप की इक किरण छाँव में,
कि सूरत गुलों की बदलने लगे।

बजाए मुरारी कोई बाँसुरी,
कि राधा का मन भी मचलने लगे।

कहीं मोर नाचा कहीं मोरनी,
कहीं माह सावन बदलने लगे।

शराफत दिखाने जरा भी बढ़े,
शरीफों के दिल भी बहलने लगे।

****

एक तरफ

काजल, बिंदी और होठों की लाली छाया एक तरफ,
और तुम्हारे खुले लटों की बिखरी माया एक तरफ।

एक तरफ है झुमके बाली, नथिया तेरी एक तरफ,
अधरों पर जो फैल रही भीनी मुस्कान एक तरफ।

पलकें, भौंहें, माथे की वो चमक तुम्हारी एक तरफ,
गुलदस्ते- से गालों की वो लाली तेरी एक तरफ।

एक तरफ है दुनिया सारी, आकर्षण सब एक तरफ,
साड़ी पहने कमर तुम्हारी और सादगी एक तरफ।

एक तरफ है तेरा होना, जगत मोहिनी एक तरफ,
हूरों की क्या बात करूँ, तेरा आलिंगन एक तरफ।

****

प्रिये

हर सुर को जो एक छंद दे,
नित भँवरे को मकरंद दे,
मृतक देह भी उछल पड़े,
जो इक हँसी तू मंद दे।

खलिहान से, हर खेत से,
मरुभूमि की हर रेत से,
पूछूँ पता, तू है कहाँ?
कुछ बोल प्रिये संकेत से।

किसी थप्पड़ में या ताली में,
प्रिये मेरी इस कंगाली में,
कर ले शामिल बस नाम मेरा,
तू चाहे किसी भी गाली में।

आ जा वापस बस अपने घर,
कहीं बिखर न जाऊँ मैं टूटकर,
भर के बाँहों में समेट दे,
प्रिये जीवन है अब तितर-बितर।

****

मेरे लिए

बाँध सके मुझको वो जंज़ीर ना बनी,
जो भेद दे सीने को ऐसी तीर ना बनी।

हौसले हैं उड़ने का उन्मुक्त गगन में,
जो रोक सके मुझको वो प्राचीर ना बनी।

है बड़ा सुकूँ तेरे आँचल की छाँव में,
तेरी गोद से अच्छी कोई कुटीर ना बनी।

निःस्वार्थ ही रहे ये तेरा प्यार सर्वदा,
तेरी ममता से मीठी हो ऐसी खीर ना बनी।

माँ का दुलारा और पिता का गर्व हूँ,
इस ज़िगर को जीत ले वो हीर ना बनी।

****

रोना पड़ता है

गर इश्क़ करना है तो खुद को खोना पड़ता है,
दिन रात गम के आँसुओं को रोना पड़ता है।

एक सिलसिला चलता है रूठने- मनाने का,
उन रूठे तिमिर में भूखे पेट ही सोना पड़ता है।

बहुत ही शीघ्र आती है ये नाराजगी उनकी,
हर रोज खुशी का एक बीज बोना पड़ता है।

फ़रमाइशें करती हैं वो सब बन्द आँखों से,
करके अपनी ज़ेब ढीली, भार ढोना पड़ता है।

वो गलतियाँ करें तो हँस के टाल देना तुम,
खुद को ही हर बार अपराधी होना पड़ता है।

****

सबकुछ तुझसे है

बाकी है अगर जान तो वो जान तुझसे है।
इस ज़िन्दगी की आन बान शान तुझसे है।

हर दिन किया है ज़िल्लतों का सामना डट के,
इस नाचीज़ को मिला हर सम्मान तुझसे है।

"पर" काटने को निकले हैं तलवार म्यान से,
इन गगनचुंबी सपनों की उड़ान तुझसे है।

इस दिल की सलाखों में कई दर्द दफ़न हैं,
मेरे चेहरे की अनमोल वो मुस्कान तुझसे है।

****

प्रेम-आरम्भ

मेरा जिया तुम बिन, जैसे नैया बिन पतवार!
ये है मेरा हाल-ए-दिल, तुमको कितना प्यार?

तुमको कितना प्यार ज़रा तुम मुँह तो खोलो।
हैं सुनने को बेताब प्रिये, तुम कुछ तो बोलो?

अब तोड़ दो सारे बंधन मन के आज यहीं।
जो है दिल में उसे ज़ाहिर कर दो आज यहीं।

कह दो सबकुछ आज कि कल मैं रहूँ न रहूँ।
तुम बोलो कुछ पहले, फिर कुछ मैं कहूँ।

आरम्भ हुई जो बात, बढ़ती ही जानी है।
सच मानो! हर प्रेम की यही कहानी है।

****

इश्क़

तुम्हारे इश्क़- सागर की, तनिक मोती चुराने में,
नौसिखिये डूब जाते हैं, इक डुबकी लगाने में।

हुस्न के इस रहस्य से तुम, यदि पर्दा उठा दो तो,
नहीं है हर्ज़ मुझको भी, मेरा दिल आज़माने में।

सबक है इश्क़ ना करना, मैं सोचा कर के देखूँगा,
कि कितना दर्द होता है, ये तेरा प्यार निभाने में।

सुकूँ मिलता बहुत है जब, तुम मेरे साथ होते हो,
बहुत ही वक़्त लगता है, तेरी यादें भुलाने में।

दुःख- दर्द बहुत है माना, पर खुशियाँ हज़ारों हैं,
करो महसूस कभी तुम भी, मजा है डूब जाने में।

****

बदल गये

इश्क़ करने वाले वो दीवाने बदल गये।
बदले घर, घरवाले और घराने बदल गये।

घर में अब दादा- दादी विरले ही मिलते हैं,
बदले हृदय, परिवार और पैमाने बदल गये।

थी लज्जा एक श्रृंगार, हिंदुस्तानी युवती का,
बदले लहज़े, परिधान और जमाने बदल गये।

आजकल के गानों में, वो सुहाने भाव कहाँ?
बदली भाषा, सुर-ताल और तराने बदल गये।

गम हो जुदाई का, कि शिद्दत नहीं वो इश्क़ में,
बदले यार, दिलदार और मयखाने बदल गये।

****

कंचन पिया

तू कंचन का कंगन पिया,
कैसे पहन मैं जाऊँ ?
चोरी का डर सता रहा,
तोहे संदूक बन्द रखाऊँ।

"ना कर मुझको बंद प्रिये,
पड़े पड़े दम घूँटत है,
न बना मुझे अनमोल तू,
दुनिया से नाता टूटत है।"

संदूक में दम घूँटत है तो,
अपना रंग बदल लो,
मोहे चलना तेरे साथ पिया,
तुम भी संग में चल लो।

"यदि साथ पसन्द है तोहे,
लो अपना रंग बदलता हूँ,
प्रिये तुमसे इस अतिप्रेम का,
लो अपना ढंग बदलता हूँ।"

पिया इतना कैसे बदल गए,
मोहे खींचत कंचन मोह,
तुझमें अब वो बात कहाँ,
मेरा हृदय करे विद्रोह।

"पर-गुण कंगन तू पहने,
ना कभी ये मेरी चाहत थी,
प्रिये बदला मैं तेरे खातिर,
बस इसी बात में राहत थी।"

बोली थी रंग बदलने को,
पिया अपना ढंग बदल आये,
तेरा साथ भी झूठा लगता है,
क्या अपना संग बदल आये?

"प्रिये तेरा हूँ, तेरा ही रहूँ,
किसकी कसम मैं खाऊँ?
सच साबित करने को बोलो,
सर अपना थाल सजाऊँ?"

हाय, हाय, यह क्या किया,
अब तुझसे ये तकरार नहीं,
हो कंचन तुम अब भी पिया,
मैं माफी की हकदार नहीं।

"तू गलत नहीं सब भूल जा,
मोहे वही पुनः सम्मान दे,
लो कनक धर्म दिखलाता हूँ,
प्रिये अपने हिय स्थान दे।"

तुम कंचन हो कंचन रहना,
तोहे धारण कर इठलाऊँ मैं,
है सबसे तू अनमोल पिया,
हिय मंदिर तुझे सजाऊँ मैं।

"मोहे मंदिर की मूरत बना,
फिर भूल न कर तू साथ दे,
संग तेरे चलना जीवन भर,
हाथों में अपना हाथ दे।"

****

नज़र भर प्यार

झरोखे से तिरी आँखें हमें हर रोज दिखती हैं,
कभी सूरत दिखा देना मिरी आँखें तरसती हैं।

खुले खिड़की अगर तेरी, मचल के कूद पड़ता हूँ,
तुझे चूमीं हवाओं को, मिरी साँसें तड़पती हैं।

कभी दिल से मिलाना दिल, कसक होती हमेशा है,
मिलन होता नहीं अपना, निगाहें रोज मिलती हैं।

मिलो तो मैं बताऊँगा, कि कितना प्रेम करता हूँ,
तुझे खुद में समाने को, मिरी बाँहें फड़कती हैं।

सुहाना दिन, सुहाने पल, सुहाना हो मिलन अपना,
सुहानी शाम को ये हसरतें मेरी फिसलती हैं!

****

कहो तो

कहो कब बाग से खुशबू चुराता है कहाँ माली।
कहो कब शान से दुनिया बजाती है कहाँ ताली।

मिलेगा हक़ तुझे तेरा, अदा कर जो जरूरी है।
रखे जूते बिना पैसा, बताती है कहाँ साली।

नहीं है भार, जिम्मदारियों को गर समझते हो।
मचलते कान से पूछो सताती है कहाँ बाली।

परखते हो मुझे तुम ज़िस्म के रंगीन पहलू से।
कहो ये दिल कहाँ काला, ज़ुबाँ भी है कहाँ काली।

****

पहला मिलन

अधर थे लाल, दोनों हाथ मेहंदी रचाये थे।
सजन को देख चुपके से तनिक वो भी लजाये थे।

छुपाये थे जतन कर चाँद सा मुखड़ा जमाने से,
उसे तारों- सितारों की चमक से भी सजाये थे।

चमक थी एक मुखड़े पर हुआ दीदार उनका जब
कई सपने सजाये थे, कई अरमाँ जगाये थे।

लगा काला निशाँ उनकी कमर तो चैन आया था,
नज़र से वो, जमाने की, कमर अपनी बचाये थे।

मिले थे जब गले उनसे, बढ़ी थीं धड़कनें मेरी,
पुकारा दिल सुना मैंने, अधर भी कपकपाये थे।

रही थीं दूरियाँ हरदम, करीबी आज बढ़नी थी,
बहुत बातें अभी बाकी, तनिक- सा ही बताये थे।

यही संपर्क पहला था, यही आनंद पहला था,
यहीं पर ज़ुल्फ़ उनकी हम, कपोलों से हटाये थे।

बेटी की विदाई

पली जिस गोद में बाबुल, चली है छोड़ के बेटी।
सभी से मोह- बंधन भी, चली है तोड़ के बेटी।

सजे आंगन- घरों को देख दुल्हन रो पड़ी फिर से,
मिली थी लाल चूनर जो, चली है ओढ़ के बेटी।

सभी रिश्ते निभाई आजतक वो छोड़ जाना है,
पिया से इक नया रिश्ता, चली है जोड़ के बेटी।

कपोलों से ढले आँसू गिरे थे माँ के आँचल में,
दुखों से लाल रोता मुँह, चली है मोड़ के बेटी।

नये रिश्ते, नयी दुनिया, नया होगा ठिकाना अब,
पिता- माता बहन- भाई, चली है छोड़ के बेटी।

****

बेटे की विदाई

छूट रहा घर आज फिर
न जाने कब आना होगा,
खींच रहा है मोह पर
हर हाल में जाना होगा।

अश्रुपूरित हैं नयन
रूँध रहा है अब गला,
सोच सोच दिल बैठ रहा
दिन इतनी जल्दी क्यों ढला?

हर ध्वनि स्पष्ट आज
हर चीज दिखाई दे रही
हर पशु परिंदों की आंखें
मुझे आज विदाई दे रही।

आज निगलना मुश्किल है
एक एक निवाला रोटी का
कर काँप रहे हैं माँ के आज
और खुला है बंधन चोटी का।

नज़र छुपाये तात खड़े,
बस रोक रहे हैं नयन नीर,
किया चरण स्पर्श, मुड़ा
और रोक न पाया परम पीर।

अब माँ के दृग झरनों का
करूँ सामना कैसे मैं?
छोड़ के आंचल, फिर खुशी का
करूँ कामना कैसे मैं?

हो रहे अल्प हर कदम कदम
गर ना जाना होता घर से,
पर पग पल- पल बढ़ता है
और डरता है हर ठोकर से।

बस आ गयी, घड़ी आ गयी,
स्तब्ध सभी जन खड़े थे,
छूकर चरण, पा शुभाशीष
लिये नयन नम चल पड़े थे।

****

नसीहत

रोज स्याही गिराना इबारत नहीं,
हाथ दोनों मिलाना इबादत नहीं।

आप की इक हँसी से जले थे चमन,
आप का मुस्कुराना नज़ाक़त नहीं।

बैर है गर तुझे दाँव ले आजमा,
रोज आँखें दिखाना अदावत नहीं।

पाप जो धुल सके तो कहाँ पाप है,
रोज गंगा नहाना नज़ाफ़त नहीं।

तात से जो मिले ज्ञान सम्हालना,
तात जो छोड़ जाये, अमानत नहीं।

हो रहे हो दुखी क्यों बुरा सोचकर,
जो तेरा है वो लेना हिमाकत नहीं।

****

मनुज

जलता है दिनकर तुमसे
मारुत चीख- चिल्लाता है।
तुझे देख गिरि स्तब्ध खड़ा,
रत्नाकर शोर मचाता है।

तिमिर गुहा में शरण लिया,
और पाहन चकनाचूर हुए।
तेरे प्रताप के आतप से,
घन काले छँटकर दूर हुए।

प्रलयंकारी लहर भी आज,
तुमसे डर के चीखी है।
तेरे हुँकार के आगे,
तड़ित कौंध **भी** फीकी है।

है मानव तू, मस्तक उठा,
यह सिंह-गर्जना कुछ नहीं।
दे भार धरा पर कदमों के
सौ थाप गजों का कुछ नहीं।

****

कर्म और भरोसा

शूल का चुभन हो
या म्लान तेरा मन हो
टूटी कमर हो तेरी
या जल रहा बदन हो।

ध्यान हो बस काम पर
न हार न सम्मान पर
कर्म कर हनुमान सा
और रख भरोसा राम पर।

****

तेरे काबिल

ढूँढता हूँ तुझे दर-ब- दर मैं, गैर लोगों के काबिल नहीं हूँ।
हौसला दे मुझे प्यार कर के, चार नज़रों को वासिल नहीं हूँ।

चाहना है तुझे इक इबादत, हाथ फैला के तुझको ही माँगा,
थाम लेना मुझे इस भँवर में, इश्क में हूँ, मैं जाहिल नहीं हूँ।

है सुकूँ बस तेरा साथ होना, दर्द होता है तुझसे बिछड़ के,
कत्ल हो जाते हैं इश्क़ में भी, कोई पेशे से कातिल नहीं हूँ।

साथ देना करूँ गलतियाँ तो, प्यार से ही मुझे तू बताना,
लाख कमियाँ हूँ मैं भी समेटे, एक इंसाँ हूँ कामिल नहीं हूँ।

आओ मिलने कभी मैं मिलूँगा, बाँह खोले तुझे मैं दिखूँगा,
हो सके तो गले से लगाना, दूरियों के मैं काबिल नहीं हूँ।

नफ़रतों से मुझे यूँ न देखो, फिक्र होगी मुझे दूर करके,
बेवफ़ा मेरी मज़बूरियाँ हैं, बेवफ़ाई में शामिल नहीं हूँ।

****

चाहत

मैं तेरे दिल से जरा सम्मान पाना चाहता।
तुझसे मिलके ढाई अक्षर ज्ञान पाना चाहता।

मैं नहीं कहता कि तू हो जा खुदा सज्दा करूँ,
चेहरे पर इक अदद मुस्कान पाना चाहता।

है मुझे ख्वाहिश कि तेरी माँग में सिंदूर हो,
मैंने कब बोला कि मैं हज़रान पाना चाहता।

इश्क़ करते हो तो ज़ाहिर भी करो इक दो दफा,
मैं बुतों के बीच इक इंसान पाना चाहता।

तुम जहाँ भी हो खबर तो दो कि ज़िंदा भी लगो,
खोजता हूँ रोज यूँ भगवान पाना चाहता।

****

सुनते जाओ

कभी इश्क़ होगा सुनो आपको भी,
कभी आपके दिल में भी आग होगी।

खुलेगी कभी आपकी नींद इक दिन,
कभी आँसुओं की भी बरसात होगी।

वो चीखें सुनाई नहीं देंगी मुझको,
कभी ऐसी भी इक मुलाकात होगी।

मुझे देखने को तड़पते रहेंगे,
कभी रात भर जाग कर बात होगी।

मुकम्मल रहेगी वही रात मेरी,
कि जब याद आये मेरी रात को भी।

****

तुमको चलना होगा

काँटे तो राह में होंगे ही,
जूते दम तोड़ चुके होंगे
तेरी विफलता देख कर
सब अपने छोड़ चुके होंगे।

दुत्कार मिलेगी हर जगह
और ताने भी सुनने होंगे,
टूट चुकी हों आशाएँ पर
नित स्वप्न नये बुनने होंगे।

सपने पूरा करने को तुम,
जब- जब कदम बढ़ाओगे।
चिकने समाज की ढालों से
फिसल फिसल गिर जाओगे।

जब मंजिल होगी पास तेरे,
घनघोर तिमिर घिर जाएगा।
तेरे दिलो दिमाग में फिर,
एक द्वंद्व युद्ध छिड़ जाएगा।

हारा दिमाग पछताएगा,
कि मंजिल थी अब दूर नहीं।
दिल बोलेगा कि आगे बढ़
मुझे उससे कम मंजूर नहीं।

बना समन्वय दोनों में,
तुमको आगे बढ़ना होगा।
चोटी कितनी भी दुर्गम हो,
तुमको ऊपर चढ़ना होगा।

****

तुझसे खुशियाँ सारी

खुली हो ज़ुल्फ़ तेरी गर, हवायें साथ चलती हैं,
कई झीलें पिघलती हैं, कई नदियाँ निकलती हैं।

तेरी साँसों की हलचल को, सुना था रात भर जागे,
हुई जब सुब्ह तो जाना, मेरी साँसें भी चलती हैं।

खयालों में कभी तुमने, किया महसूस है मुझको?
कि तुमको याद करते ही, मेरी खुशियाँ उछलती हैं।

ज़माने भर की तारीफें, करूँ तुम पर समर्पित मैं,
मेरा यह प्रेम सुन कर अब, तेरी सखियाँ भी जलती हैं।

सभी फूलों की ख्वाहिश है, तेरी खुशबू से वो महकें,
कि तुमसे टूट जाने को, सभी कलियाँ मचलती हैं।

****

ओझल पिया

धावत- धावत कंठ झुराये, झिलमिल हुई रे नज़रिया,
खोजत मेरे नैन फिरें, कहाँ ओझल हुए रे सँवरिया।

खेत में खोजा, बाग में खोजा,
रोवत सिसकत राग में खोजा,
बस तोसे ही मिलन को पिया,
पूरी छान गया मैं बजरिया,
खोजत मेरे नैन फिरें, कहाँ ओझल हुए रे सँवरिया।

मृगतृष्णा- सा है तू पिया,
मैं मृग बन वन-वन धाऊँ,
सिर घूमा और पैर दुखाये,
नाचत है दुपहरिया,
खोजत मेरे नैन फिरें, कहाँ ओझल हुए रे सँवरिया।

धावत आवें पास में तोरे,
तू दूर चलत ही जावे,
आकर मोहे थाम पिया,
अब भटकत हूँ मैं डगरिया,

खोजत मेरे नैन फिरें, कहाँ ओझल हुए रे सँवरिया।

****

है स्वीकार हर कंगाली

आज अधर पर उतरी है,
अरुणोदय की रक्तिम लाली।

कपोल-पंखुड़ी खिले- खिले,
उन्हें घेर रही जुल्फें काली।

देवनदी- सी बल- खाती,
तेरी कमर भरूँ अंगपाली।

बीती विभावरी भानु उगा,
बनके तेरे कानों की बाली।

बस डूब सकूँ तेरे चक्षु-सिंधु,
फिर है स्वीकार हर कंगाली।

****

अर्धांगिनी

सारी परेशानी मेरी हो,
हर खुशी हमारी तेरी हो,
गिरें नहीं नैनन के मोती,
काश! तुम्हीं अर्धांगिनी होती।

तेरे हर नखरे हम सहते,
तुझे मनाते, कुछ ना कहते,
संग मेरे सपने सँजोती,
काश! तुम्हीं अर्धांगिनी होती।

तुम सजना, मैं करूँ तारीफें,
तुम्हें हंसाऊँ, सुना लतीफ़े,
खुश हो कर आँचल भिगोती,
काश! तुम्हीं अर्धांगिनी होती।

हाथ में मेरे हाथ हो तेरा,
आजीवन बस साथ हो तेरा,
होकर विदा मेरी गोद में रोती,
काश! तुम्हीं अर्धांगिनी होती।

पलकों पर मैं तुझे सजाता
मधुर-मधुर कोई धुन बजाता
तुम आलिंगन करके सोती,
काश! तुम्हीं अर्धांगिनी होती

प्रेम की बगिया उगाता,
तेरा शॉपिंग बैग उठाता,
बाँहों में मेरी सुध- बुध खोती,
काश! तुम्हीं अर्धांगिनी होती।

****

मेरी होने वाली अर्धांगिनी

हे! मेरी होने वाली अर्धांगिनी,
मेरी वामिनी,
मेरी माताजी की इकलौती बहुरानी।

मेरे घर में कदम रखने से पहले,
कुछ सरल किंतु कठिन शर्तों पर
तुम्हें स्वीकृति देनी होगी।

मेरी माँ की दो बेटियाँ,
मेरी बड़ी बहनें,
जो अब जा चुकी हैं अपने ससुराल,
माँ को अकेला छोड़।
तुम्हारे आते ही माँ
तुममें एक बेटी की तलाश करेंगी,
शायद पूरी हो जाये,
तुम्हें पाकर।
"यदि स्वीकार है
इस माँ की ममता
तो कदम आगे बढ़ाओ।"

मेरा परिवार
संयुक्त परिवार
अर्थात परिभाषित रिश्तों से
कहीं ज्यादा लोग।
बाँस के जैसे एक दूसरे से लिपटे
एक दूसरे को रगड़ते खड़े हैं
अपनी जड़ों से
एक दूसरे को जकड़े हुए।
"यदि स्वीकार है
इन जड़ों का अन्तर्बन्धन
तो कदम आगे बढ़ाओ।"

मेरा गाँव
मेरी जन्मभूमि
देश के विकसित भागों से बहुत दूर
जहाँ पहुँचने के लिए
सुबह को निकलती शाम को वापस जाती
एकमात्र रोडवेज़ बस है।
हाँ, आजकल कँटीले तारों की
घेराबंदी के बीच से एक
'एक्सप्रेस वे' भी निकलती है।
दिख जाती हैं बत्तियाँ

रात को गाँव के बाहर से।

लेकिन, एक नहर,

असीमित हरियाली,

सुकून और शांति,

प्रेम और पवित्रता,

एक मंदिर, एक तालाब,

और तालाब के किनारे

साल में होने वाला एक विशेष आयोजन-

"छठ पूजा।"

आजतक इस छठ पूजा में

मेरी अनुपस्थिति ने

माँ और मुझे बहुत रुलाया है।

करवा चौथ का व्रत

करो या ना करो, तुम्हारी मर्जी।

लेकिन

"यदि स्वीकार है

छठ पूजा का महाव्रत

तो कदम आगे बढ़ाओ।"

घर में स्वागत है।

****

चाँद सी

जब भी देखूँ हर बार मुझे वह चाँद सी लगती है।
कभी प्रेम में खिली हुई सी
कभी तनिक मुरझाई सी
कभी छुपाती राज अनेकों
कभी किसी परछाईं सी
कभी बहुत चिल्लाती है वह फिर शांत सी लगती है,
जब भी देखूँ हर बार मुझे वह चाँद सी लगती है।

कभी सजी सी दुल्हन लागे
जख्म का मेरे मरहम लागे
कभी मनाती मातम ऐसे
चाँद पे जैसे ग्रहण लागे
है व्यवहार कुशल इतनी हीरे की खान सी लगती है,
जब भी देखूँ हर बार मुझे वह चाँद सी लगती है।

कभी रुलाती, कभी मनाती
निशिदिन नूतन स्वप्न सजाती
कभी उसे मैं गैर सा लागूँ,

कभी जोर से गले लगाती।

जीवन सरिता पर खड़ी हुई एक बाँध सी लगती है,

जब भी देखूँ हर बार मुझे वह चाँद सी लगती है।

****

जमाना साथ देगा?

हर तरफ जब गीदड़ों का झुंड होगा
हर गली में गिर रहा नरमुंड होगा
हर जिगर में उठ रहा सैलाब होगा
क्या तुम्हें लगता जमाना साथ होगा?

हो रहे हों हर हृदय के जख्म गहरे
बादलों सा गिद्ध की आँखों के पहरे
नफ़रती हाथों में जब हथियार होगा
क्या तुम्हें लगता जमाना साथ होगा?

जब मौत के हाथों में तेरा हाथ होगा
क्या तुम्हें लगता जमाना साथ होगा?

****

तेरे आने से

मिली लंबी थकान के बाद तू आराम की तरह,
जुलाई की दुपहरी में तू आयी शाम की तरह।

तेरे आने से बगिया के सभी फूलों में रौनक है,
बिना तेरे पड़ा था मैं किसी गुमनाम की तरह।

सदा आगाज़ को तरसा सफर की बात क्या करनी,
करीबी यूँ बढ़ी मिलना हुआ अंजाम की तरह।

तरसता था कभी एक हमसफर एक साथ के लिए,
पराए नाम के पीछे जुड़ा उपनाम की तरह।

रहा अब तक कभी काला कभी उजला सा ये जीवन,
मिले बेरंग सी दुनिया में तुम गुलफ़ाम की तरह।

****

प्रेम-स्वीकरण

कि एक प्रस्ताव लाया हूँ, तुझे स्वीकार होगा क्या?
अगर मैं प्यार कर बैठूँ, तुझे भी प्यार होगा क्या?

ये मन बेचैन रहता है, तेरे ही स्वप्न में डूबा,
तेरे सपनों में आऊँ तो, कभी इज़हार होगा क्या?

मेरी सूनी सी बगिया के कुसुम मुरझाये बैठे हैं,
तेरे आने से दिल-गुलशन, कभी गुलज़ार होगा क्या?

वो सारे गम हमारे हों, तेरे हिस्से खुशी आये,
मेरी खुशियों से भी तुझको, कभी इनकार होगा क्या?

यदि ना मिल सकें तुझसे, अभागे ही रहेंगे हम,
मेरा अगले जनम तक भी ये इंतज़ार होगा क्या?

****

याद

जब नींद न आये बिन तेरे
जब भी घिर आएँ अँधियारे
जब नैन शून्य में कहीं टिके
मैं याद तुझे कर लेता हूँ।

जब मन- हृदय बेचैन रहे
अँसुवन से भीगे नैन रहे
फिर भी मुख मेरा मौन रहे
मैं याद तुझे कर लेता हूँ।

जब सन्नाटा हो शोर में
और एकाकी में शोर हो
जब हृदय मेरा कमजोर हो
मैं याद तुझे कर लेता हूँ।

आज सुबह से बैठा हूँ
मैं कब नींद में रहता हूँ?
जब जब खुलती नींद मेरी
मैं याद तुझे कर लेता हूँ।

****

लिपट जाया कर

करता है इंतज़ार कोई शिद्दत से, पलट जाया कर।
वो कभी हाथ फैलाये तो सीने से लिपट जाया कर।

घटित नहीं होता तकदीर में लिखा हुआ सब कुछ,
किसी दुपट्टे के जैसे इक घड़ी में अटक जाया कर।

मनहूसियत सी है दिमाग की सुनने वालों में,
तू किसी के दिल की सुन के भटक जाया कर।

जरूरी नहीं सुनना हर किसी के मन की बात,
अच्छी न लगे तेरे मन को तो डपट जाया कर।

संभव नहीं हर किसी की आंखों का तारा हो पाना,
बिना सोचे किसी की आंखों में खटक जाया कर।

****

थामो मुझे

आओ कभी मिलूँगा, राहें निहारता हूँ।
नाराज़ हो अभी भी, मैं हीर हारता हूँ।।

थामो मुझे भँवर में, पूरा न डूब जाऊँ।
मुझको गले लगा लो, सर्वस्व मैं समाऊँ।।

पूरे न हो रहे हैं, अरमान कुछ अधूरे।
पीना न चाहता हूँ, पीसे हुए धतूरे।।

सब राज खुल रहे हैं, क्यों और मैं छुपाऊँ।
कोरा रहा है कागज, क्या चाहते दिखाऊँ?

****

डर कैसा?

यदि जाना है उस मंजिल तक
तो क्षण- क्षण ना तू ठहर ऐसा,
पथ की अंधेरी गलियों में भी
यदि अपनों का हो साथ, तो डर कैसा?

मूँदे अपनी आँखें तू बढ़ता जा
रुक ना जाना कभी एक पत्थर जैसा,
रणक्षेत्र में चलती तलवारें, फिर भी
यदि पिता - सा हो ढाल, तो डर कैसा?

तू आगे बढ़, तू दौड़ पड़, तू उड़ जा
मिलेगी शोहरत और मिलेगा पैसा,
मोड़ दे अपनी कश्ती तूफानों में भी
यदि कश्ती हो माँ की गोद, तो डर कैसा?

तेरे कदम न रुक जाएँ बीच राह में
आज तू कर ले कुछ प्रबंध ऐसा,
भिड़ जा तू रास्ते के बाघ से भी
यदि राखी हो बहन की साथ, तो डर कैसा?

****

वक़्त और मैं

वक़्त से कदम मिलाते- मिलाते थक गए हैं
अब नहीं रुकेंगे उसके लिए
आने दो उसे अपनी गति से

अरे बहुत होगा तो क्या होगा
ज़माना यही बोलेगा न
कि वक़्त से आगे निकल गया।

परवाह नहीं मुझे ज़माने की
फिक्र नहीं है उसके पैमाने की
कोशिश है तो बस जमीं पर पैर जमाने की।

****

बाकी है

कई जीत बाकी है कई हार बाकी है
जीत लेने को पूरा संसार बाकी है
अरे अभी तो बस मुस्कुराये हैं,
ठहाकों की पूरी बौछार बाकी है।

तिरस्कार बाकी है कई सम्मान बाकी है
समेट लेने को पूरा आसमान बाकी है
अरे अभी तो बस पंख फैलाये हैं,
मंजिल के लिए लम्बी उड़ान बाकी है।"

****

आत्म प्रोत्साहन

उठ!

चल!

फिर से एक नई शुरुआत करते हैं।

जो कमी रह गई,

उसे पूरा करने को,

फिर से कुछ नया करामात करते हैं।

जो रास्ते के पत्थर हैं,

चल उन्हें तोड़ने को,

फिर से एक नया आघात करते हैं।

बहुत दिन बीत गए रे,

खुद से मिले हुए,

आ पास में बैठ

फिर से बड़ी-बड़ी बात करते हैं।

****

अब रचने की बारी है

राजा भी चुन लिए बहुत
युद्ध भी सुन लिए बहुत
सब कुछ बीती बात हुई
अब ये घड़ी हमारी है।
रट लिये इतिहास बहुत
अब रचने की बारी है।

रानियों का साज-धाज
राजाओं के काम-काज
वो सब तो करके चले गए
अब हम पर जिम्मेदारी है।
रट लिये इतिहास बहुत
अब रचने की बारी है।

भरी कहानियाँ वीरता की
क्रूरता की, कायरता की
उनकी करनी अब खत्म हुई
अब अपने हाथ दोधारी है।
रट लिये इतिहास बहुत
अब रचने की बारी है।

आपस मे लड़ते देख लिया
कट-कट के मरते देख लिया
सब भूल कर आगे बढ़ो
ये दुनिया एक मदारी है।
रट लिये इतिहास बहुत
अब रचने की बारी है।

तारीख़ें रट के क्या होगा
सब चेहरे रट के क्या होगा
दुनिया की रफ़्तार बढी
सब इंटरनेट पर जारी है।
रट लिये इतिहास बहुत
अब रचने की बारी है।

हर काल पढ़े, हर काम पढ़े
ख़ास पढ़े, कुछ आम पढ़े
दुनिया अब जिस मुट्ठी में है
वह मुट्ठी भी हमारी है
रट लिये इतिहास बहुत
अब रचने की बारी है।

****

मेरी तकिया

सुनती है हर दर्द बाँहें खोल कर,
पी जाती आँसू पसीना घोल कर।

थकता हूँ तो माँ- सा प्यार देती है,
तन्हाई में, सीने से लगा लेती है।

जो तू है तो प्यारी नींद भी है,
तेरे होने से सारी जीत भी है।

रिश्ता तेरा मुझसे कुछ गुमनाम है,
कुछ तू भी मेरे प्रेम में बदनाम है।

तकिया है यह मेरी कोई जिन्न नहीं,
है आपके पास भी, कोई भिन्न नहीं।

****

ठंड की गरीबी

बेघर हैं हम आज और कपकपाते हैं,
मजबूर हैं बहुत क्योंकि कम कमाते हैं,
मदद को हम आपसे बोल नहीं पाते,
ठंड बहुत है साहब, दांत कटकटाते हैं।

जी छटपटाता है, तन सिहर जाता है,
जिजीविषा ना हो तो लहू ठहर जाता है,
गाँव में अब भी दया है, दानवीरता है,
न जाने क्यों हर आदमी शहर जाता है।

करते बहुत हो वादे मेरे तन ढकने को,
खिंच जाते हैं चित्र कुछ खबर भरने को,
साहब दे नहीं सकते तो झूठ ना बोलो,
गरीब हैं हम आ जाएंगे वोट करने को।

गर कर सको मदद तो दौड़े चले आना,
पुराने हों या हों फटे सब बांध ले आना,
गरीब हैं साहब, आपका प्रेम काफी है,
दिखाने मेरी बेबसी बस कैमरा न लाना।

****

प्रगति

मनुज जाति, मही पर पापों का,
चादर जब- जब फैलाएगी।
तब- तब प्रकृति ज्वाला बन कर,
फिर तांडव यूँ दिखलाएगी।

सिखलाएगी सम्पूर्ण ज्ञान,
आधुनिकता के ठेकेदारों को।
कर देगी खंडित क्षण भर में,
कृतिमता के कुविचारों को।

वृक्ष नहीं ये वस्त्र मही के,
चीर हरण अब बन्द करो।
हे मूर्ख मनुज, हे नासमझ,
खुद से रण अब बन्द करो।

दावाग्नि कहीं, हिमपात कहीं,
संदेश हैं ये सब प्रकृति के।
विनाश चक्र अब रोक मनुज,
यह लक्षण नहीं समृद्धि के।

****

प्रकृति

कैद है इंसान, फल-फूल रही है प्रकृति,
आया है वसंत, झूले झूल रही है प्रकृति।

नीला हुआ आकाश, फिर टिमटिमाये तारे,
पापियों को धीरे- धीरे भूल रही है प्रकृति।

अब ज़हर बनाये जाते हैं व्यापार के लिए,
हर मर्ज़ की दवाओं का मूल रही है प्रकृति।

बेझिझक धरा का तुम चीर- हरण करते रहे,
फिर भी अपने **कार्य** में मशगूल रही है प्रकृति।

****

राधा माधव प्रेम

जितनी है मेरे हिय उतनी तेरे हिय भी आग रहे।
माधव सा मैं प्रेम करूँ यदि राधा सा अनुराग रहे।।

तेरी एक झलक को मैं
हर तरुवर बैठ निहारूँ,
लगे न मेरी नज़र तुझे
मैं प्रतिदिन नज़र उतारूँ,
चीर हृदय दिखलाऊँ मैं बस प्रेम तेरा ऋतुभाग रहे।
माधव सा मैं प्रेम करूँ यदि राधा सा अनुराग रहे।।

तरुवर की शाखा पर बैठे
पर्ण-पर्ण मैं प्रेम लिखूँ,
नाम राधिके निकल पड़े
जब जब मैं अतिप्रेम लिखूँ,
प्रति अक्षर का तेरे हिय पर मधुर- मनोरम दाग रहे।
माधव सा मैं प्रेम करूँ यदि राधा सा अनुराग रहे।।

बैठे- बैठे यमुना तीरे,
चक्षु बंद करूँ स्मरण तू

वंशी की धुन छेड़ूँ जब

तू आ जाये धीरे- धीरे,

मुग्ध करे मन तेरा प्रतिदिन, वंशी में वह राग रहे।

माधव सा मैं प्रेम करूँ यदि राधा सा अनुराग रहे।।

****

उलझन

कुछ बातों की उलझन में अब नींद नहीं नैनन में
बस बीत रही है रैना कुछ यादों की सिहरन में।

कैसे खुद को समझाऊँ बस सोच- सोच घबराऊँ
इन काँप रहे अधरों को अब कैसे शांत कराऊँ?

तेरे आने की है आहट, है कैसी ये कुलबुलाहट
प्रतिपल है याद आती तेरे लबों की मुस्कुराहट।

चहुँओर पुकार लगाये चहुँओर नज़र टिकाये
तेरी खबर न कोई आई हम प्रतिक्षण अश्रु बहाये।

कोई आया है खबरी बढ़ी है फिर बेसबरी
खबर कुछ नई सुना जाये बड़ी है सिर की गठरी।

मिली है फिर निराशा नहीं क्या कोई आशा?
रहा न जाये अब यारों हमें यूँ प्यासा प्यासा।

करूँ क्या हार जाऊँ मैं? सबकुछ वार जाऊँ मैं?
करो कुछ यूँ जतन भगवन कि इसके पार जाऊँ मैं।

तात जब घर आये

शौक सिंधु हैं ख्वाब गगन,
तनय- सुता दृगबन्द मगन,
आ रहे तात घर आज फिर,
कोना-कोना खुश है सदन।

पत्नी की चूड़ियाँ भी होंगी,
तनया की गुड़िया भी होगी,
बेटे के शौक निराले हैं और,
चूरन की पुड़िया भी होगी।

बस आने की हुई खबर,
तात से ऐसा हुआ असर,
रोटियाँ तवे की जल गई,
झोले पर सबकी थी नज़र।

घर आते झोला बिखर गया,
फिर सबका चेहरा निखर गया,
घर में एक बूढ़ी माँ भी है,
कुछ न ला पाना अखर गया।

पर खुश थी माँ बस देख उसे,
एक नज़र भर निरेख उसे,
क्या माँ के शौक नहीं होते?
खुश थी चंहुओर परेख उसे।

आसान नहीं तात होना,
शाख बिन हरा पात होना,
कर सके ख्वाब सबके पूरे,
मुश्किल ऐसी औकात होना।

****

माँ और मंजिल

इक हूक लिए संदूक लिए
जब बाद बरस हम घर आये,
माँ का आँचल मिल जाते ही
आँसू से नैना भर आये।

बचपन की सारी यादों को
आँखें मूँदे फिर जीना है,
माँ सहलाये हाथों से जब
गोदी में मेरा सर आये।

परियाँ,तितली,मेंढक,भालू
की गाथाएँ भी सुननी है
नरकासुर की बातें हो तो
दिल में फिर वैसा डर आये।

यूँ धरती पर लोटे- लोटे
बन जाना है जिद्दी फिर से,
माँ के हाथों में बेलन हो
फिर रग-रग मेरा थर्राये।

मंजिल की भागा-भागी में,

सपने टूटे, अपने छूटे,

अब रहना माँ की गोदी में,

जो करना था वो कर आये।

****

मंझधार

आँखों में फटे हैं बादल आज
या लहर है कोई सुनामी की,
टूटा है कोई बाँध बड़ा या
पिघली बर्फ हिमानी की।

ये जलसैलाब रुकेगा कब
ये राह दिखाई देगी कब,
सब छोड़ दिया सब त्याग दिया
ये विरह विदाई देगी कब।

कब तक यूँ मायूस रहूँ और
कब तक ये जलधार बहेगी,
जीवन नदी की नैया जल बिन
कब तक यूँ मँझधार रहेगी।

****

बीतता वक़्त

रह- रह आंखों का नम होना
राहों का अति दुर्गम होना
न कोई वृक्ष का छाँव यहाँ
न पाँव के छाले कम होना।

लक्ष्य की मृगमरीचिका में
मृग तृष्णा हमें बुझानी है।
बहु अवसर में उलझे मन को
नित राह नई सुझानी है।

रोमांचक दृश्य के दर्शन में
क्षण क्षण कहानी बीत रही
जीवन को सुगम बनाने में
यह मधुर जवानी बीत रही।

बीते पल याद करूँ कैसे
प्रतिपल भविष्य की चिंता है
होगा बहुत कठिन कह पाना
बचपन अभी भी ज़िंदा है।

****

मैं छला गया हूँ

तेरी महफिलों में उछाला गया हूँ।
अनेकों दिलों से निकाला गया हूँ।

हवाओं से छलनी न होगा बदन ये,
उमड़ते तूफानों में पाला गया हूँ।

कभी अर्श से फर्श पर भी गिरा हूँ,
कभी आग में भी तो डाला गया हूँ।

मिटा न सकोगे ये हस्ती मेरी तुम,
कई भट्ठियों में उबाला गया हूँ।

न टूटे न बिखरे, वो फौलाद हूँ मैं,
तरक्की के साँचों में ढाला गया हूँ।

****

क्यों जी रहे

शान से जी रहे जब तलक जी रहे।
ख़्वाब जीने का है बेधड़क जी रहे।

क्या सुबह जी रहे शाम की सोच के,
जी रहे क्यों अगर ये कसक जी रहे।

हो रहे क्यों खफा गर मेरी साँस है,
लानतों से कहो अपना हक जी रहे।

खौफ क्यों हम करें कि मरेंगे अभी,
बाज़ सा बादलों को झटक जी रहे।

हाँ मरेंगे मगर युद्ध में, जंग में,
लाश ही हो गए जो दुबक जी रहे।

आज ऐलान है मौत से जंग का,
देख लेगी लगा के तिलक जी रहे।

हाँ अगर बज पड़ेगा बिगुल मौत का,
मौत देखे कि हम भी थिरक जी रहे।

प्यारे

न ढलती अगर शाम प्यारे।
मैं होता न बदनाम प्यारे।

समा से न शबनम बरसती,
न होते वे गुमनाम प्यारे।

न शम्मा बुझी थी न साँसें,
तो फिर क्यों हैं इल्ज़ाम प्यारे।

न होतीं अगर तितलियाँ तो,
न बनते ये गुल-दाम प्यारे।

वे शामिल किए कातिलों में,
न जानूँ मैं अंजाम प्यारे।

****

आत्म-वार्ता

दुनिया की सुध छोड़ दिया
और खुद में बंद किया खुद को।
किरणें सूरज की चीर रहीं,
कोई तो खबर दे अंबुद को

मैं निकला था कि डूब सकूँ
हर इश्क का दरिया खाली है।
मैं बैठा हूँ अँधियारे में
और घर पे आज दीवाली है।

ऐ मेरी खुशी, क्यों रूठ गयी
क्या मैंने ऐसा पाप किया?
दिन-रात मास बरसों से मैं
बस तेरे लिए ही जाप किया

घर जाती हर पगडंडी के
मैं मोह- जाल में उलझा हूँ।
घर जाना है इक कठिन स्वप्न
मैं कर्म-जाल में उलझा हूँ।

अपने सपनों को सुलझाते
एकांत दर्द को झेला है।
क्यों रह जाता हर बार दुःखी
चहुँओर खुशी का मेला है।

अब का जीवन है श्वेत श्याम
रंगों की होली बाकी है।
चमकेगा चंदा आंगन में
अभी कई दीवाली बाकी है।

****

हुंकार

कलम तोड़ दोगे,
स्याही न दोगे
लहू में डुबा
अस्थियों से लिखेंगे,
वो सच्ची कहानी
बिखरती जवानी
लिखेंगे शिला पर
युवाओं की बानी

कई पीढ़ियों तक
ये चलता रहेगा
हृदय से हृदय में
ये पलता रहेगा
शिरा का लहू भी
उबलता रहेगा
सूरज उगेगा
और ढलता रहेगा।

मुमकिन नहीं है
इसे भूल पाना
जो छाए अंधेरा
मशालें जलाना
थके पाँव मेरे
तू आगे बढ़ाना
जो सोए हुए हैं
उन्हें भी जगाना।

बिगुल बज पड़ेगा
वो रण भी छिड़ेगा
हिमालय की चोटी भी
चेतक चढ़ेगा
वो ज़िंदा रहेगा
जो खुद से लड़ेगा
कटारें उठीं गर
तो महंगा पड़ेगा।

रक्तरंजित धरा
लाल दरिया बहेगी
सदियों की कुंठा को

अब ना सहेगी

न सोचो हमेशा

कि कुछ ना कहेगी

ये युवा कौम है

कुछ कर के रहेगी

****

भाग्य- कर्म

ठान कर बैठा सतत
कि हारना मंजूर नहीं
है कर्म की निष्ठा यही
मैं हूँ कोई मगरूर नहीं।

कर्मफल सोचा कभी जो
कर्म की रणनीति से
मिल पाया जो तय रहा
दुर्भाग्य की कूटनीति से।

भाग्य- कर्म का द्वंद्व है
या खुद से खुद की जंग है?
संघर्ष से परिणाम तक
सब रास्ते ही तंग हैं।

संघर्ष से थक हार कर
सब मोह बंधन पार कर
अग्नि में जल गयी देह
आज आत्मा से रार कर।

****

दुनियावी सौदा

खर्च किया खुद को इतना
दुनियावी हाट बाज़ारों में
हर सौदे में **ठगा** गया
नुकसान हुआ हज़ारों में।

प्रेम खरीदा धोखा पाया
सुख- दुःख दोनों संग मिले,
सबकुछ छोड़ एकांत खरीदा
तन-मन- दिल जब तंग मिले।

एकांत का सौदा भारी था
मैं हुआ अकेला यारों में
खर्च किया खुद को इतना
दुनियावी हाट बाज़ारों में।

****

अंतिम छलांग

मन सन्यासी, तन सन्यासी,
जीवन है अब बासी- बासी,
ये दिल कहता बस जाऊँ अब
जाकर मथुरा या फिर काशी।

मंजिल रस्ते सब मिथ्या हैं,
खो जाए सब तो राहत है,
रह रह मन क्यों दूषित करता
दे दो इस सपने को फाँसी।

राहों में अब चलते- चलते,
जूते फट जाने से पहले
कदमों को कोई तो रोके,
गर्दन सूखी जिह्वा प्यासी।

चढ़ना है पर्वत की चोटी
अंतिम बारी उद्यम करके,
फिर मुझको कोई ना रोके
रक्खूँ जब मंजिल को दासी।

****

अंकुरण

क्यों हमारी नींद गायब हो गयी है?
आज क्यों मिलके हमी से वो गयी है?

मैं यहाँ बेचैन जागे मर रहा हूँ,
बेच कर घोड़े कहीं वह सो गई है।

कह रही थी इश्क हमसे हो रहा है,
क्यों अचानक जान मेरी खो गयी है?

हो रही है फिक्र उसकी फिर हमें क्यों?
था नहीं ऐसा कि हमसे रो गयी है।

चाहे कुछ भी हो मगर अब खुश बहुत हूँ,
क्या वही ये बीज कल से बो गयी है?

****

काश कोई मिल जाये

रखा है छुपा बंद ताले में दिल को,
मिले कोई ऐसा कि बन जाए चाभी।

कशिश है मुझे भी कि हो कोई ऐसा,
पुकारें जिसे देख कर दोस्त भाभी।

वही हो जिसे मैं करूँ प्यार जी भर,
वफ़ा वो करे या करे प्यार ना भी।

न शिकवा शिकायत, न उम्मीद होगी,
उसे माफ है, गर करे वो ख़ता भी।

अगर सामने हो तो जी भर निहारूँ,
किसी गैर को फिर न देखूँ जरा भी।

****

किरदार

एक संक्रमण काल आया है
जब पुत्र ब्रह्मचर्य आश्रम से
गृहस्थ आश्रम की तरफ
कदम रख रहा है,

इसी वक़्त पिता गृहस्थ आश्रम से
वानप्रस्थ आश्रम की तरफ
अग्रसित हो रहे हैं।

पिता- पुत्र का किरदार बदल रहा है।

जैसे- जैसे पिता का कंधा
कमजोर पड़ने लग रहा है,
गृहस्थ आश्रम की जिम्मेदारियाँ, जवाबदेहियाँ
सब पुत्र के कंधे पर आने लगी हैं।
हर क्रिया- प्रतिक्रिया
जिसपर पहले पिता की नजरें
बराबर जमी रहती थीं,
अब वो नज़रें कमजोर पड़ने लगी हैं।

अब पुत्र की नजरें ज्यादा चौकस और

सचेत रहने लगी हैं।

पिता जी कहते हैं: "अपनी- अपनी पारी"

वो अपनी पारी बखूबी निभा चुके,

अब पुत्र की बारी है,

जब पिता और पूरे परिवार को एक मजबूत

और भरोसेमंद कंधे की जरूरत है।

हे प्रभु! पुत्र को इतनी शक्ति देना

कि अपनी पारी में पिता की भांति

शिकायत का मौका न दे।

****

यज्ञकुंड

अनभिज्ञ हृदय जब व्यग्र हुआ
पाकर अनुभव सर्वज्ञ हुआ
स्मृतियों की आहुति देकर
एक विरह हुताशन यज्ञ हुआ।

उस ज्वाला की माया देखा
जलती- हँसती काया देखा
दृष्टि कोई परिहास विशिख
मैंने किसकी छाया देखा?

यज्ञकुण्ड का धूमक नभ में
आकृतियाँ बदले क्षण- क्षण
कुछ चेहरे कुछ शब्द दिखे
क्या कहना चाहे कण- कण?

जब हुआ सशंकित मन मेरा
वापस स्मृतियाँ कौंध गयीं
ठुकराकर आहुति की शर्तें
उस यज्ञभूमि को रौंद गयीं।

हावी हो रण में ऊहापोह
मन को दुर्बल कर जाता है
चाहे रण हो तन का, मन का
हर वार विफल कर जाता है।

****

मिलन वृद्धाश्रम का

काश! एक और बार मिल पाते।
बताओ न तुम किस वृद्धाश्रम में हो?

कुछ पुराने दराजों में रखी
दीमकों से लड़ती
किताबों के पन्नों को पलटते हुए
मुझे एक तस्वीर मिली,
क्या अब भी तुम
ऐसी ही दिखती हो?
काश! एक और बार मिल पाते।

बताओ न
तुम किस वृद्धाश्रम में हो?
क्या झील जैसी आँखों में
अब भी वो तेज है
जिससे मैं घायल हुआ करता था।
वो मोती जैसे चमकीले दाँत तुम्हारे
जिनसे मेरे हाथ पर

घड़ी बनाया करती थी

बचे हैं या ......

बताओ न मिलना है तुमसे

तुम्हारे अधर,

क्या अब भी उतने ही रसीले हैं

तुम्हारे हाथों को देखे

अरसे बीत गए

झुर्रियाँ आ गयी होंगी न?

मुझे चूमना है।

कमर तुम्हारी,

अब भी उतनी ही लचकती है

या बुढापे में

जोड़ों के दर्द शुरू हो गए?

ठंडियों में ख्याल रखना

बहुत ज्यादा दर्द होता है।

सुनो, सेहत का ख्याल रखना

बाजार की चीजें

खाने से परहेज रखना

मानती नहीं थी उस वक़्त भी

लेकिन अब मान जाना,

कोई टोकने वाला नहीं होगा न।

कैसे हैं बच्चे तुम्हारे?

कितने लाख का पैकेज है?

बहु मानती तो है न बेटे को?

कितने पोते पोतियाँ हैं?

आते हैं बच्चे कभी मिलने?

या मेरी तरह तुम भी ..

अब भी मत कह देना कि

कितना प्रश्न पूछते हो

सालों की दबी ख़्वाहिशें हैं

निकल लेने दो,

आज भी तुम उतना ही जवाब देना

जितना अच्छा समझो।

एक बात पूछनी थी

क्या अब भी मन के किसी कोने में

मेरा ख्याल बचा है क्या?

यदि हाँ! तो गिने चुने दिनों के लिए ही

स्वीकार कर लो न मुझे

"मैं" सदा तुम्हारा

****